786/92

मुहब्बते इमाम हुसैन

रदियल्लाहु तआला अन्हु

।। मुरत्तिब ।।
हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद
अब्दुर्रहीम ख़ाँ क़ादरी, रज़वी
मुकाम व पो. जमदाशाही जिला बस्ती (यू.पी.)
हाल मुकाम
दमुआ जिला छिन्दवाड़ा (म.प्र.)
मो. [illegible]
7415066579

तआवुन करने वालों के नाम

(1) जनाब मुहम्मद हबीब भाई राम नगर दमुआ
बराए ईसाले सवाब– जुम्ला मर्हूम मोमिनीन व मोमिनात

(2) जनाब हसन गुल इरान, लन्दन
बराए ईसाले सवाब– मरहूम हमेश गुल खान

(3) मुहम्मद फहीम 12 नम्बर दमुआ
बराए ईसाले सवाब– मरहूम शहज़ाद चिश्ती साहब

(4) जनाब मुहम्मद ईब्राहीम उर्फ इब्बू 12 नम्बर दमुआ
बराए ईसाले सवाब– मरहूम भूरे खां व सुगरा बी
और मुहम्मद ज़ाहिद उर्फ जन्नू

(5) जनाब मुहम्मद साजिद अली खान, बाजार मुहल्ला दमुआ
बराए ईसाले सवाब– मरहूम अब्दुल वहीद खान

(6) जनाब मुहम्मद बिलाल परवेज साहब
बराए ईसाले सवाब– मरहूम मुहम्मद रमजान व खातून बी

(7) जनाब कमरुद्दीन, शमशुद्दीन, मुनव्वर अली, मस्जिद मुहल्ला दमुआ
बराए ईसाले सवाब–म. इसरातुन्निसा (इस्रातुल बी) म.हाजी जोसू

(8) जनाब मुहम्मद यूनुस खान, राम नगर दमुआ
बराए ईसाले सवाब– मरहूम हज्जन जुबैदा बी

(9) जनाब मुहम्मद इनायत भाई राम नगर दमुआ
बराए ईसाले सवाब– मरहूमा जिन्नत बी (जन्नत बी)

(10) जनाब मुहम्मद सलीम खान, 8 नम्बर दमुआ
बराए ईसाले सवाब– मरहूम अहमद खान

(11) जनाब मास्टर मुहम्मद अनीस डुंगरिया
बराए ईसाले सवाब– तमाम जुम्ला मर्हूम मोमिनीन व मोमिनात

(12) जनाब हाजी जिबरईल साहब, माईनस दमुआ

(13) जनाब हफीजुल्लाह दफाई, मुहल्ला दमुआ

(14) जनाब फहीमुल कुरैशी, कुटुम्ब देव, दमुआ
बराए ईसाले सवाब–मरहूम अतीक कुरैशी

(15) अब्दुल शरीफ उर्फ बब्लू, मोमिनपुरा दमुआ
बराए ईसाल सवाब : मरहूम अब्दुल कय्यूम, मरहूमा शकीला बानो

(16) मुहम्मद ज़ाहिद खाँ, झरना
मरहूमा जुबैदा बी, फातमा बी, मुमताज़ बी, मरहूम अ. रहीम

किताब मिलने का पता– अ. मजीद सईन
दमुआ, मो. 9993494374

हदिया 30/-...................

786/92

तक़रीज़े जमील

अलहम्दु ल-क या अल्लाहु वस्सलातु वस्सलामु अलै-क या हबीबल्लाह स्वल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ।

मुहर्रमुल हराम के बारे में 50 सवालात के उ-लमाए अहले सुन्नत के जवाबात नामी हिन्दी रिसाला का मैं ने मुताला किया ।

हज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम ख़ाँ क़ादरी साहब ख़तीबो इमाम जामा मस्जिद दमुआ ज़िला छिन्दवाड़ा ने बड़ी मेहनत व मुशक्क़त से हिन्दी रस्मुल ख़त में मुरत्तिब फ़रमाया है । क़ौमे मुस्लिम की हिदायत व रहनुमाई की भरपूर कोशिश की है । हमारे प्यारे सुन्नी भाईयों को ठंडे दिल व दिमाग़ से इसका मुताला करना चाहिए और उ-लमाए अहले सुन्नत के इरशादात को दिल से क़बूल कर के इस पर अमल करना चाहिए ।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने हबीब रऊफ़ु रहीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम के तुफ़ैल हर मुसलमान को हक़ बात क़बूल करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । आमीन और मौलाना अब्दुर्रहीम ख़ाँ क़ादरी की दीनी ख़िदमात को क़बूल फ़रमा कर फ़लाहे दारैन का ज़रिया बनाए और उनकी उम्र व अमल और इल्म में बरकतें अता फ़रमाए और ख़िदमते दीन की तौफ़ीक़ बख़्शे आमीन ।

फ़क़त

फ़क़ीर मुहम्मद अन्सार अहमद रिज़वी क़ादरी मुफ़्ति-ए लहू

15 ज़ुल हिज्जह 1434 हिजरी

पहले इसे पढ़ें

ताजिया दारी, अलम उठाना, नोहा करना, मुहर्रम के महीने में ग़म मनाना, ब्याह शादी न करना, बच्चों को फ़कीर बनाकर घर घर से भीख मंगवाना, रोने और रुलाने के लिए वाकियाते करबला बयान करना और सुनना और सुन कर चीखना और चिल्लाना मस्नूई (बनावटी) कर्बलाएं बनाना वहां दस मुहर्रम को मेले लगाना हज़रत कासिम की मेंहदी निकालना, उन के नाम पर मेले लगाना, मुहर्रम में हरे लाल काले कपड़े या टोपी पहनना यह सब वह बातें हैं । जो राफिज़ियों (शिय्यों) से अहले सुन्नत के अवाम में आई हैं । और रिवाज पा गई हैं। और यह सब वह काम हैं। जो नाजाईज़ हैं इन सब बातों के राईज होने और फैलाने की वजह यह है कि अवाम आम तौर से तफरीह और दिल लगी और तमाशा पसन्द होते हैं और इस किस्म की बातों को बहुत जल्दी कबूल कर लेते हैं और कुछ मौलवी जिन का मज़हब ही यह है कि पब्लिक खुश रहे ख्वाह खुदा व रसूल नाराज हो जायें वह इन बातों को जाईज़ व सवाब का काम बता देते हैं । फिर तो लोगों को मजा आ जाता है कि यह खूब रही तफरीह व दिल लगी तमाशे और मेले भी देखने को मिले, कूदने फांदने को भी मिले, मेले में बे पर्दा, बे ग़ैरत लड़कियों, औरतों के सिंगार भी देखें, उनके जिस्म से जिस्न भी भीड़ में लगाने को मिले और सवाब भी मिले । ऐसे मौलवी साहब सलामत रहें कि उन्होंने सवाब भी और आख़िरत भी दिलवा दिया और अरमान भी दुनया के सभी पूरे हो गये । कोई दिल की हसरत बाकी नही रह गई। दुनिया की हर जाईज़ – नाजाईज खुशी भी पूरी हो गई – और मौलवी साहब के फतवे की रु से चूंकि यह सब इमाम हुसैन की मुहब्बत में हुआ है। लिहाज़ा जन्नत भी मिल गई।

अगर लोग इन तमाशाईयों, मेलों और ताज़िएदारों के नाम पर होने वाली हराम कारियों को वैसे ही करते तो अगरचे यह लोग गुनहगार होते लेकिन इस्लाम और इस्लाम वाले बुज़ुर्ग इमामे हुसैन तो बदनाम न होते। मगर हक बात यह है। कि इन सब पर दो क़िस्म का वबाल व अज़ाब है। एक हराम करने का और दूसरे हज़रत सय्यिदुना इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के नाम को बदनाम करने का और जितना अज़ाब उन सब लाखों करोड़ों ताज़िएदारों पर होगा उन सब के बराबर अकेले उन

मौलवी साहब पर होगा जिन्होंने इस मुरव्वजह ताज़िएदारी को जाईज़ क़रार दिया है। या मना नही किया है और सवाब का काम बता दिया है।

भाईयो ! अल्लाह के मुकद्दस बन्दों की यादगारों को मेले और तमाशे, गुन्डा गर्दी के अड्डा मत बनाओ, अल्लाह से डरो और अल्लाह के नेक बन्दों से शर्म करो, इस्लाम को बदनाम मत करो, अल्लाह वालों से मुहब्बत करना ज़रुरी है। लेकिन यह मुहब्बत शरीअते इस्लाम के दायरे में रह कर होना चाहिए मुरव्वजह ताज़िएदारी को दुनिया का कोई भी दीनदार या सलाहियत खुदाए तआला का खौफ रखने वाला आलिम जाईज़ नही कहता । सिवाए इन में एक आध मौलवी इब्नुल वक़्त मौलवियों के कि जो हर वक़्त पब्लिक को खुश करने के चक्कर में लगे रहते हैं।

सन 1988 हिजरी में यानी अब से तकरीबन 46 साल पहले बरैली शरीफ मरकज़े अहले सुन्नत से एक फतवा सादिर (शाए) हुआ था। जिस में मुरव्वजह ताज़िएदारी को नाजाईज़ व हराम फरमाया गया था। और उस ज़माने में पूरे हिन्दुस्तान के 75 बड़े बड़े उलमाए किराम के दस्तख़त के साथ उस फत्वे को पोस्टर की शक्ल में शाए (छपवाया) किया गया था। उस की तफसील हज़रत फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाह अलैह की लिखी हुई किताब खुतबाते मुहर्रम के सफह 470 पर मुलाहिज़ा फरमायें । गोया कि इस ताज़िएदारी के हराम होने पर उम्मत का इज्माअ है। (यानी कि इस में इख्तेलाफ भी नही)

लिहाज़ा मुरव्वजह ताज़िएदारी को जाईज़ कहने वाले यकीनन गुमराह व बिदअती जाहिल हैं।

आला हज़रत ने भी ताज़िएदारी के हराम होने के सबूत में पूरी एक किताब लिखी है। जो हिन्दी ज़बान (भाषा)में भी मार्केट में मिलती है। 10 से 15 रुपये में बाज़ार में दस्तयाब है। किताब का नाम है। रिसालए ताज़ियादारी है। इसके इलावह मौलाना तत्हीर रज़ा साहब क़िब्ला (बरेली शरीफ) आसान ज़बान में एक किताब लिखी है। जिस का नाम है "मुहर्रम में क्या जाईज़ क्या नाजाईज़" यह किताब भी हिन्दी ज़बान (भाषा)में छपती है और मार्केट में दस्तयाब है। यह किताब भी 10 से 15 रुपये में मार्केट में मिलती है।

इसके इलावा हज़रत फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाह अलैह की लिखी हुई किताब " खुतबाते मुहर्रम " भी हिन्दी में छप चुकी है। 500 से ऊपर उस में पेजेस है। जिस का हदया 200 से 250 के बीच है।

मज़हबे अहले सुन्नत एक नज़र में (पहचान)

(1) अल्लाह के इलावा किसी की इबादत न की जाये और उस के महबूब बन्दों से मुहब्बत व अकीदत रखी जाये।

(2) अल्लाह वालों का नाम भी लिया जाये और उनका काम भी किया जाये यानी उनके रास्ते पर चला जाये और यही असल अकीदत व मुहब्बत है। जो लोग अल्लाह वालों का नाम लेते हैं मगर उन के कामों और उन के रास्तों को भूल गये वह लोग गलत रास्ते पर हैं।

(3) अम्बिया व औलिया भी अल्लाह तआला के बन्दे हैं मगर आम लोगों में और उन में बहुत बड़ा फर्क है। जैसे गुलाम और आका, फकीर और बादशाह का फर्क मुहताज व मुख्तार का फर्क।

(4) मज़हबे अहले सुन्नत को अल्लाह वालों से मुहब्बत करना है लेकिन अल्लाह को भूल नही जाना है। जो लोग अल्लाह तआला को भूल गये उस की इबादत नही करते नमाज़ रोज़ा और ज़कात से सरोकार नहीं रखते और नियाज व फातिहाओं, उर्सों में लगे हुए हैं वह सख्त ग़लती पर हैं बड़े धोखे में हैं क्योंकि हक यह है कि जब तक फर्ज़ जिम्मे पर बाकी रहता है। कोई नफिल कबूल नही होता है।

(5) जो लोग अल्लाह के नेक बन्दों खास कर सय्यिदुल अम्बिया महबूबे खुदा स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी करते हैं। वह काफिर है। मुसलमान नही हैं।

(6) जो पीर व मुरीद, नमाज रोज़ा वगैरा इबादते इलाहिया का इन्कार करते हैं और होश व हवास के बावजूद उन की बजा आवरी नही करते और शरीअत को तरीकत से अलग करते है, एहकामे शरअ का इनकार करते हैं यह सब गुमराह व बददीन हैं और दूसरों को गुमराह करने वाले हैं। (7) नियाज व फातिहा, मीलाद व सलाम उर्स वगैरह उमूरे मुरव्वजह सूरतों में बिदअते हसना हैं और अच्छे काम हैं लेकिन शरअन फर्ज़ व वाजिब नहीं हैं। और नमाज रोज़ा ज़कात वगैरह फर्ज़ है। खुदाई फर्ज़ है।

जिनके बगैर इस्लाम ना मुकम्मल है। हां नियाज़ व फातिहा को भी कभी कभी करते रहना चाहिए क्योंकि यह उमूर हिन्दुस्तान में अहले सुन्नत की पहचान है।

(8) अहले सुन्नत के इलावा तमाम बातिल फिरके मसलन कादियानी, वहाबी, देवबन्दी, मौदूदी, राफ़ज़ी, खारजी, चकड़ालवी, नेचरी, सब बातिल परस्त और गैर इस्लामी फिरके हैं। इन से इलाहदगी जरूरी है। इन से मेल जोल रखना सख्त मना है।

(9) अल्लाह तआला बगैर वसीले के देने पर भी कादिर है और जिस को जब चाहे जिसे चाहे अता फरमा सकता है लेकिन वसीला उस को पसन्द है और उस को राजी करने के लिए और उस की नेमतें हासिल करने के लिए उसके नेक बन्दों का वसीला बनाना बिला शक व शुबह के जाईज है। लेकिन उस के नेक बन्दे वही हैं। जो उस के बताए हुए रास्ते पर चलते हैं।

अपने भी खफा मुझ से हैं बेगाने भी ना खुश हैं
मेरे जहरे हला हल को कभी कह न सका कन्द ।

पुरानी रस्में

बाप दादा से पुरानी रस्में जो चली आती हैं । जाहिल अवाम को उन से बाज रखना और उन्हें बन्द करवाना बड़ा मुश्किल काम है । इस लिए हमें बहुत सारी गलत रस्मों की इस्लाह में हमें बड़ी बड़ी मुश्किलात का मुकाबला करना पड़ता है, तरह तरह की अज़ियतें उठानी पड़ती हैं, किस्म –किस्म के दिलखराश जुमले सुनने पड़ते हैं । उन में से एक यह भी है कि मैं जब भी कहीं भी मस्जिद में तकरीरों के दरमियान किसी गलत बात से मना करता हूँ तो पीठ पीछे यह कहा जाता है कि नए नए मौलवी और नया नया मसअला ।

इसी तरह जामा मस्जिद दमुआ जिला छिन्दवाड़ा मध्य प्रदेश इन्डिया पिन 480555, में जब मैं ने मुरव्वजह ताज़ियादारी के खिलाफ तकरीर की तो पहले अवाम का अकसर हिस्सा मुझ से मुखालिफत करने लगा फिर बाद में कुछ लोगों ने इल्म होने के बाद मुआफिकत करली । मगर ताज़िएदार आज भी हमारे दुशमन बने बैठे हैं। तो ऐसे लोगों के लिये

हमारा एक ही जवाब है कि नए नए मौलवी, नया नया मसअला पीठ पीछे कहना औरतों का काम है अगर आप वाकई मर्द हैं तो नागपूर यहां से करीब है और छिन्दवाड़ा भी करीब है इन दोनो जगहों से दारूल उलूम अमजिदया से या दारुल उलूम गौसिया से मुफ्तियाने किराम से जिस को मैं जाईज़ कहता हूं उसे नाजाईज लिखवा लाएं या मैं जिसे नाजाईज़ कहता हूं उन से जाईज़ लिखवा लायें या बरैली शरीफ से पोस्ट से फतवा मंगवा लें तो जानें । घर में बैठ कर औरतों की तरह बात करना छोड़ दें । इसी में आप के दीन व दुनिया की भलाईयां है।

तालीम हो, इल्म हो फिर क्या नहीं कब्जे में तुम्हारे ।
तुम चाहो तो जंगल को भी गुलज़ार बनादो।।

यह एक अटल हकीकत है कि कोई भी कौम उस वक्त तक तरक्की याफ्ता नही कही जा सकती जब तक वह इल्म की लाज़वाल दौलत से माला माल न हो, और मुसलमानों का दुर्भाग्य यह है कि वह इस मैदान में दुनिया की तमाम कौमों से पीछे हैं। हालाकि यह मुशाहिदा है कि यह कौम जिस के लिए जिल्लत व अपमान लाजिम करार दिया गया था जब उस ने खुद को तालीम की तरफ रागिब किया तो आफताब व माहताब की तरह चमकने लगी । आज हर जगह उस का शुहरा और दबदबा है मगर वह कौम जिस के घर में इल्म की पैदाइश हुई, तहज़ीब व तमद्दुन जिस के घर में परवान चढ़ी वही इस से महरुम है।

दीनी तालीम

यूं तो मुसलमान दीनी और दुनयावी दोनो तालीम में पीछे हैं मगर वर्तमान युग में दीनी तालीम से जो बे एतिनाई और बे रग़बती बरती जा रही है यह मुसलमानों के लिए चिन्तनीय है। दीनी तालीम के अभाव का ही नतीजा है कि आज मुसलमानों का कौमी व मिल्ली तशख्खुस (विशेषता) मिटाया जा रहा है। मगर किसी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती, साथ ही इस हकीकत से भी इन्कार की गुंजाइश नहीं कि आज मुस्लिम मुआशरे में फैली हुई बेशुमार बुराईयों की जड़ दीनी तालीम से बेखबरी है यही वजह है कि इस्लाम ने मुआशरे को सुन्दर व स्वस्थ बनाए रखने के लिए मुआशरे के हर व्यक्ति को हुसूले इल्म को फर्ज करार दिया है ।

इस लिए मेरी लिखी हुई किताब को जो भी हिन्दी पढ़ा हुआ है

वह जरुर इस किताब को पढ़ेगा अगर उसके हाथ में किताब लगी और उस ने हिन्दी जानते हुए किताब नहीं पढ़ी तो मैदाने महशर में दामनगीर हूंगा हक गोई बे बाकी ।

आईने जवां मरदां हक गोई व बे बाकी ।
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रु बाही ।

उलमाए दीन का हक गो और बे बाक होना जरुरी है । उन पर लाजिम है कि बातिल से न डरे और बिला ख़ौफ ली म त लाईम हक को बयान करे । जिस के अन्दर यह जौहर नही है वह हकीकत में वारिसे अम्बिया कहलाने का मुस्तहिक नहीं ।

मोहतरम उलमाए अह्ले सुन्नत से एक अहम सवाल

आप कैसे नाइबे रसूल और वारिसे रसूल हैं कि चंद सर करदह हरियों की ताइद व हिमायत से घबराकर बातिल के खिलाफ हक की आवाज़ बुलन्द करने से गुरेज़ कर रहे हैं। अपनी ज़िम्मेदारियों के लिए सिर्फ आप ही जवाब देह होंगे। मैदाने महशर में जब हबीबे अकरम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नियाबत व वरासत का हक अदा न करने का सवाल करेंगे और अल्लाह तबारक तआला अपने हबीब स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हुक्मे उदूली का हिसाब लेगा तो आप क्या जवाब देंगे ?

मसअलों से मोड़ कर मुंह कब तलक बैठोगे तुम।
कोई भी तूफां तुम्हें घर से उठा ले जाएगा।।

मैदाने महशर में हक उल्फत की अदा कौन करेगा ।
आका के नवासों के सिवा कौन करेगा ।।

अर्ज़ मुअल्लिफ (लेखक की गुजारिश)

मुसलमानों के लिए हर शोअबे हर मआमले से मुतअल्लिक दीने इस्लाम में हिदायात व रहनुमाई मौजूद है। लेकिन अफसोसअब अकसर मुसलमान दीनी उलूम सीखने समझने के कि लिए मेहनत कम करते हैं । दुनयावी उलूम व फुनून और बड़ी से बड़ी डिग्रियां हासिल करने का जज़्बा व शौक़ ज़्यादा है। इसी वजह से मुआशरे में बहुत सी गलत फहमियां फैल चुकी हैं। अगर हर मुसलमान इस्लामी तालीमात को सीखना समझना शुरू कर दे तो काफी हद तक हमें ग़लत अक़ाइद व नज़रियात और गलत फहमियों से निजात मिल सकती है। इस किताब में मुहर्रम शरीफ से मुतअल्लिक मुआशरे में फैली हुई गलतफहमियों को दूर करने की कोशिश की गई है। यह किताब मुस्तनद व मुअतबर सुन्नी उ–लमा की किताबों से सवाल जवाब की रौशनी में तय्यार की गई। अल्लाह अ–ज़्ज वजल्ल इस किताब को नाशिर के लिए मुझ गुनहगार के लिए मेरे वालदैन रिशतेदारों, असातेज़ए किराम पीरो मुरशिद और सारी उम्मते मुसलिमा के लिए ज़रयए निजात बनाए और इस किताब का सवाब हजरत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर कयामत तक आने वाले मुसलमानों बिलखुसूस तमाम सहाबए किराम अहले बैते अतहार शोहदाए करबला रदियल्लाहु तआला अनहुम को पहोंचाए । आमीन

मेरी तमाम अहले इल्म हज़रात से गूज़ारिश है कि इस किताब में किसी क़िस्म की ग़लती नज़र आए । तो इत्तला फरमाएं इन्शाअल्लाह शुकरिया के साथ रूजू करने वाला पाएंगे ।
अगले एडीशन में तस्हीह कर दी जाएगी । अल्लाह दुनिया भर के मुसलमानों को सुन्नी उलमा के फैज़ से माला माल फरमाए।

उर्दू से हिन्दी –अब्दुर्रहीम खान कादरी रज़वी
जमदा शाही बस्ती (यू.पी.)
मोबाइल नम्बर : 9303046736 7275912387

हमारे सवालात
उ-लमाए अहले सुन्नत के जवाबात

सवाल 1 – ताजिया बनाना कैसा है ?

जवाब – सय्यदी आला हजरत इमामे अहले सुन्नत हजरत अल्लामा मौलाना अलहाज अल कारी मुफ्ती इमाम अहमद रज़ा खान अलैहिर्रहमह इरशाद फरमाते हैं ताज़िया मासियत (गुनाह) है। ताज़िया बनाना देखना जाईज़ नहीं।

(हवाला– फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 16 सफह 155 सफा 489)

सवाल 2--शरअ में ताज़िए की असल (हकीकत) क्या है ?

जवाब –फरमाने आला हजरत अलैहिर्रहमह : ताज़िया मम्नूअ है। शरअ (शरीअत) में कुछ असल नहीं और जो कुछ बिदआत उन के साथ की जाती है। सख्त नाजाईज़ हैं। (हवाला– फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 490)

सवाल 03 – क्या ताज़िया बनाना कुफ्र व शिर्क है ?

जवाब – आला हजरत फरमाते हैं । ताज़िया जरूर नाजाईज़ व बिदअत है। (हवाला– फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 21 सफा 490)

सवाल 04– ताज़ीम करना ताजिए की शरअन कैसा है ?

जवाब – आला हजरत फरमाते हैं ताज़िया बनाना देखना जाईज़ नहीं और ताज़ीम व अकीदत सख्त हराम व अशद (सख्त) बिदअत –अल्लाह तआला मुसलमान भाईयों को राहे हक की हिदायत फरमाए ।

(हवाला– फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 489)

सवाल 05 –ताज़िए पर मन्नत मानना कैसा है ?

जवाब – आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं ताज़िए पर मन्नत बातिल व नाजाईज़ है ? (हवाला– फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 24 501)

सवाल :– 06 – क्या ताज़िए के ज़रिए हाजतें पूरी होती हैं ?

जवाब– आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते है ताज़िए को हाजत रवा यानी ज़रिए हाजत रवा समझना जिहालत पर जिहालत है।

(हवाला– फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 24 499)

सवालः– 07 – सुना है अगर किसी ने ताज़िया बनाने की मन्नत मानी तो ज़रूर बनाना चाहिए वरना नुक़्सान होगा क्या यह बात दुरुस्त है ?

जवाब – आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते है ताज़िया बनाना बिदअत व गुनाह है (लिहाज़ा) न करने को बाईस नुक़्सान ख्याल करना या जानना वहम है मुसलमान को ऐसी हरकात व ख्यालात से बाज़ आना चाहिए। (हवाला– फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 499-503)

सवाल :08 अगर कोई मुसलमान ताजियह बनाए तो कितना गुनाह है ?

जवाब – आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं बिदअत का जो गुनाह है। गुनाह की नाप तौल दुनिया में नहीं।

(हवाला– फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 24 509 510)

सवाल 09 – ताजियह बनाने वालों को ताज़िया बनाने के लिए चन्दा देना या ताज़िया बनाने में मदद करना कैसा है ?

जवाब – आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं ताज़िया में किसी क़िस्म की इमदाद जाईज़ नही। अल्लाह तआला ने फरमाया है गुनाह और ज़ियादत्ती के मुआमलात में एक दूसरे की मदद न क्या करो।

(पारा 6 सूरह माइदह 2) मज़ीद इरशाद फरमाते हैं।

अलम (इस्लामी झन्डा) ताज़िए में जो कुछ सर्फ (खर्च) होता है। सब इसराफ व हराम है। (हवाला– (फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 24 506)

सवाल 10 – ताज़िए पर जो मिठाई चढ़ाई जाती है। क्या इस को खा सकते है ?

जवाब–आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं ताज़िया पर जो मिठाई चढ़ाई जाती है। अगर चे हराम नहीं हो जाती मगर इस के खाने में

जाहिलों की नज़र में एक अमर (हुक्म) नाजाईज़ शरई की वुकअत बढ़ाने और उस के तर्क (छोड़ने) में इरा से नफरत दिलाती है। लिहाज़ा न खाई जाए। (फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 24 499)

सवाल 11 –अलम (झन्डा) ताजिया देखने के लिए घरों से निकलना कैसा है ?

जवाब –आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं जो काम नाजाईज़ है। उसे तमाशे के तौर पर देखने जाना भी गुनाह है। (फतावा रज़विया सफा 499) मजीद एक मुकाम पर इरशाद फरमाते हैं अलम, ताज़िए, मेंहदी उनकी मन्नत, गश्त, चढ़ावा, ढोल, ताशे, मरसिए, मातम, मस्नूई करबला को जाना औरतों का ताज़िए देखने के लिए निकलना यह सब बातें हराम व गुनाह व नाजाईज़ व मना है। (फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 24 496)

सवाल 12 –शोहदाए करबला के रौज़ों की तस्वीरें और नक्शे घरों और दुकानों में आवीज़ा (लगाना) कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब –शैखुल हदीस हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफा आज़मी रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फरमाते हैं हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु और शोहदाए करबला रदियल्लाहु तआला अन्हुम के मुकद्दस रौज़ों की तस्वीर नक़्शा बना कर रखना और उन को देखना यह तो जाईज़ है क्योंकि यह एक गैर जानदार चीज़ की तस्वीर या नक़्शा है। लिहाज़ा जिस तरह कअबा बैतुल मुकद्दस नअलैन शरीफैन वगैरह की तस्वीरें और उन के नक़्शे बना कर रखने को शरीअत ने जाईज़ ठहराया है। इसी तरह शोहदाए करबला के रौज़ों की तस्वीरें और नक़्शे भी यक़ीनन जाईज़ ही रहेंगे। लेकिन हर साल सैंकड़ों हज़ारों रूपये के खर्च से रौज़ए करबला का नक़्शा बना कर उसको पानी में डुबू देना या ज़मीन में दफन कर देना या जंगलों में फेंक देना यह यकीनन हराम व नाजाईज़ है। क्योंकि यह अपने माल को बरबाद करना है। और मुसलमान जानता है। कि माल को ज़ाए और बरबाद करना हराम व नाजाईज़ है।

(जन्नती ज़ेवर तकरीज़ बुदा सफा 155 156)

हकीमुलउम्मत ताजदारे गुजरात मुफस्सिरे शहीर हज़रत अल्लामा मौलाना

मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैह भी इरशाद फरमाते हैं। अगर (हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ का) सहीह नक़्शा तय्यार किया जाए जिस की ज़ियारत की जाए उसे दफन न किया जाए बल्कि महफूज़ रख्खा जाए बेला शुबहा जाइज़ है ।

(फतावा नईमिया सफा 182)

सवाल 13– मुहर्रम शरीफ में किए जाने वाले खिलाफे शरअ कामों की निशानदेही फरमाएं ?

जवाब – शैखुल हदीस हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आज़मी रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फरमाते हैं ढोल ताशा बजाना ताज़ियों का मातम करते हुए गली गली फिराना सीने को हाथों या जन्जीरों या छुरियों से पीट पीट कर और मार मार कर और उछलते कूदते हुए मातम करना ताज़ियों की ताज़ीम के लिए ताज़ियों के सामने सजदा करना, ताज़ियों के धूल उठा उठा कर बतौरे तबर्रुक चेहरों सरों और सीनों पर मलना अपने बच्चों को फकीर बना कर मुहर्रम की नियाज़ के लिए भीक मंगवाना, सोग मनाने के लिए खास किस्म की लगवियात और खुराफात की रस्में जो मुसलमानों में फैली हुई हैं । यह सब मम्नूअ व नाजाईज़ है। और यह सब ज़मानए जाहिलियत और राफिज़ियों (शियों) की निकाली हुई रस्में हैं । जिन से तौबा करके खुद भी इन हराम रसमों से बचना और दूसरों को बचाना हर मुसलमान पर लाज़िम है। इस तरह ताज़ियों का जुलूस देखने के लिए औरतों का बे परदा घरों से निकलना और मर्दों के मजमे में जाना और ताज़ियों को झुक झुक कर सलाम करना यह सब काम भी शरीअत में मना और गुनाह है।

(जन्नती जेवर तख्रीज शुदा सफा156 157)

सवाल 14– मुहर्रम शरीफ में दस रोज तक करबला वालों की याद में सोगवार रहना, सोग मनाना, शरअन कैसा है ?

जवाब – आला हजरत फरमाते हैं मुहर्रम शरीफ में दस रोज़ तक सोगवार रहना मम्नूअ व नाजाईज़ है। (फतावा रज़विया [illegible])

मज़ीद आला हजरत फरमाते हैं शरीअत ने औरत को शौहर की मौत

पर चार महीने दस दिन सोग का हुक्म दिया है। औरों की मौत के तीसरे दिन तक इजाज़त दी है। बाक़ी हराम है और हर साल सोग की तजदीद तो किसी के लिए असलन हलाल नहीं।

(फतावा रज़विय्या शरीफ जदीद जिल्द 24 सफ़ा 495)

सवाल 15 – मैदाने करबला में हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु और उन के रुफ़का पर ज़ुल्म व सितम किए गए उन्हे पढ़ कर या सुन कर दिल गमगीन हो जाए आंखों से आंसू छलक पड़ें। तो क्या यह भी मना है ?

जवाब – आला हज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं जी नहीं जैसा कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं। अरे सुनते नही हो बेशक अल्लाह न आँसुओं से रोने पर अज़ाब करे न दिलके गम पर (ज़ुबान की तरफ से इशारा करके फरमाया) हां उस पर अज़ाब है या रहम फरमाए। इस को बुखारी व मुस्लिम ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

(सही बुखारी किताबुल जनाइज़ बाबुल बका इन्दल मरीज़ जिल्द 1 सफ़ा 174)

इसी तरह फतावा आलमगीरी में भी है। जामिउल मुज़मिरात से (बुलन्द आवाज़ से रोना) और करना बीन करना (इस्लाम में) जायज़ नहीं लेकिन बिगैर आवाज़ के रोना और बहाना ममनूअ (मना) नही आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान रदियल्लाहु अन्हु इरशाद फरमाते हैं कौन सा सुन्नी होगा जिसे वाक़िए करबला का गम नही। या उस की याद से दिल महज़ून (मलाल) और आंखे पुरनम नहीं हां मसाएब में हम को सब्र का हुक्म फरमाया है। जज़अ फज़अ (रोना, पीटना, सर पटकना, चिल्लाने) को शरीअत मना फरमाती है। और जिसे वाकई दिल में गम न हो उसे झूठा इज़हारे गम (गम) रिया (दिखावा) है और कसदन (जान बूझ कर) गम आवरी और और गम परवरी खिलाफे रज़ा है। जिसे उस का गम न हो। उसे बे गम न रहना चाहिए बल्कि उसे गम न होने का गम

होना चाहिए कि उस की मुहब्बत नाकिस है। और जिस की मुहब्बत नाकिस हो उस का ईमान नाकिस है। वल्लाहु तआला अअलमु बिस्सवाब । (फ़तावा रज़विया शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ा 487–488)

(16) सवाल:– शोहदाए करबला रदियल्लाहु अन्हुम की याद में मातम करना और नौहा पढ़ना कैसा है ?

जवाब :–आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं । मातम करना छाती पीटना हराम है नीज (और) मातम व नौहा मुहर्रम हो गैरे मुहर्रम मुतलक़न हराम है। (फ़तावा रज़विया शरीफ़ जिल्द 23 सफ़ा 487)

रसूले अकरम स्वल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैं मैं बे ज़ार हूं उस से जो भदरा चिल्लाए और चिल्ला कर रोए और गिरेबान चाक (फाड़) करे (बुखारी व मुस्लिम ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु के हवाले से उसे रिवायत किया) (भदरा यानी किसी के मरने पर हिन्दुओं की तरह बतौरे सोग सर मुन्डाना) रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह अज्ज वजल्ल ने जहन्नम में नौहा करने वालों की दो सफें बनाएगा एक सफ जहन्निमयों के दाहिनी जानिब और दूसरी सफ जहन्नमियों के बाएं (उलटे)जानिब वह जहन्नमिय्यों पर इस तरह भौंकते होंगे जैसे कुत्ते भौंकते हैं । (क़ब्रे ख़ातिर तज़्किरा क़ुर्रतुल उयून सफ़ा 30)

(17) सवाल :–सुना है 10 मुहर्रम को घर में चूल्हा जलाना रोटी पकाना झाड़ू लगाना नहीं चाहिए क्या यह बात दुरुस्त है ?

जवाब :–आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं यह सब बातें सोग हैं और सोग हराम है । (फ़तावा रज़विया शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ा 488)

तो मालूम हुआ 10 मुहर्रम आशूरा के रोज़ घर में चूल्हा जला कर रोटी, सालन वगैरा पका भी सकते हैं खा भी सकते हैं दूसरों को खिला भी सकते हैं और घर की सफाई भी कर सकते हैं झाड़ू व पोछा वगैरा भी लगा सकते हैं । हमारा इस्लाम 10 मुहर्रम को इन कामों से मना नही करता । अल्लाह गलत फहमियों से तमाम मुसलमानों को निजात अता फरमाए ।आमीन ।

(18) सवाल:मुहर्रम शरीफ के महीने में शादी ब्याह कर सकते हैं या नहीं ?
जवाब :– आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं माहे मुहर्रम में निकाह करना जायज़ है। निकाह किसी भी महीने में मना नहीं।

(फतावा रजविया शरीफ जिल्द 11 सफा 193)

मुहतरम जनाब प्रोफेसर मुफ्ती मुनीबुर्रहमान साहब दामत बरकातहुमुल आलिया इरशाद फरमाते हैं। मुहर्रम या सफर या साल के किसी भी महीने में निकाह करना मना नहीं है। (तफहीमुल मसाइल जिल्द 1 सफा 240)

(19) सवाल:– सुना है मुहर्रम में सिर्फ हजरत इमामे हुसैन और दिगैर शोहदाए करबला रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन को ईसाले सवाब कर सकते हैं और किसी को नहीं। क्या यह बात दुरुस्त है ?
जवाब :– जी नहीं। आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं मुहर्रम वगैरह हर वक्ते ज़माना में तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलियाए किराम की नियाज़ और हर मुसलमान की फातिहा जायज़ है। अगर चे खास आशूरा का दिन हो। (फतावा रजविया शरीफ जिल्द 24 सफा 499)

मज़ीद इरशाद फरमाते हैं इन अय्याम में सिवाए इमामे हसन व इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हुमा के सिवा किसी की नियाज़ फातिहा न दिलाना जेहालत है। हर महीना हर तारीख में हर वली की नियाज़ और हर मुसलमान की फातिहा हो सकती है। (फतावा रजविया शरीफ जिल्द 11 सफा 484)

(20) सवाल:–मुहर्रम शरीफ में सुन्नी मुसलमानों को काले कपड़े पहनना कैसा है ?
जवाब :– आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं मुसलमानों को चाहिए अशरए मुबारका मे तीन रंगों को पहनने से बचे (1) सियाह (2) सब्ज़ (हरा) (3) सुर्ख लाल (फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 496)

हजरत अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद खलील खान बरकाती कादरी रहमतुल्लाह अलैह भी इरशाद फरमाते हैं अय्यामे मुहर्रम यानी यकुम मुहर्रम से बारहवीं मुहर्रम तक सियाह रंग न पहना जाए। क्योंकि यह

राफिजियों यानी शिय्यों का तरीका है।

(माखूज अज सुन्नी बहश्ती ज़ेवर हिस्सा पंजुम सफा 578)

सगे अत्तार अर्ज करता है मुहर्रम शरीफ में काले कपड़े पहनना शिय्यों का तरीका है और सोग की अलामत है इस लिए उ–लमा फरमाते हैं कि सियाह लिबास पहनने से मुसलमान बचें ताकि कोई देख कर बद गुमानी न करे शिया न समझे। हां अशरए मुहर्रम के इलावह काला लिबास पहनने में हर्ज नहीं जैसा कि कानूने शरीअत मे लिखा है कि सियाह कपड़े पहनना जाहिर करने के लिए न हो तो मुतलकन जायज़ है।

(कानूने शरीअत सफा 335)

(21) सवाल:– मुहर्रम में अपने बच्चों को इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु का फकीर बना कर घर घर जा कर भीक मंगवाना कैसा है ?

जवाब :– आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं बच्चों को सब्ज़ कपड़े पहनाना और उन के गलों में डोरियां बांध कर उन को हजरत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु का फकीर बनाना ममनूअ (मना) व नाजायज़ है। (फतावा रज़विय्या शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 509)

मजीद इरशाद फरमाते हैं फकीर बन कर बिला जरूरत व मजबूरी भीक मांगना हराम है और ऐसों को देना भी हराम (इस लिए कि यह गुनाह के काम पर दूसरे की इमदाद करना है)

(22) सवाल:– मुसलमानों का मुहर्रम शरीफ में पानी या शरबत की सबील लगाना कैसा है ?

जवाब:– आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं पानी या शरबत की सबील लगाना जब्कि यह निय्यत महमूद (यानी अच्छी निय्यत के साथ) और खालिसन लिवजहिल्लाह (अल्लाह की रज़ाके लिए) सवाब रसाई अरवाहे तय्यबा अइम्मए अतहार (आइम्मए अतहार की पाक अरवाह को सवाब पहुंचाना) मक्सूद हो बिला शुबहा बेहतर व मुस्तहब व कारे सवाब है। (फतावा रज़विय्या शरीफ जदीद जिल्द24 सफा 520)

(23) सवाल:–अहले तशीअ की लगाई हुई सबील से सुन्नी मुसलमानों

को पानी शरबत वगैरा पीना चाहिए या नहीं ?

जवाबः–आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं मु–तवातिर सुना गया है। कि सुन्नियों को जो शरबत देते हैं इस में निजासत मिलाते हैं। और कुछ न हो तो अपने यहां के नापाक किल्लतैन का पानी मिलाते हैं। (फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 526)

सवाल(24) :–इमामे हुसैन और दिगर शोहदाए करबला रदियल्लाहु अन्हुम की नियाज़ व फातिहा के बारे उलमाए केराम क्या फरमाते हैं ?

जवाबः– आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं फातिहा जायज है रोटी, शीरीनी, शरबत जिस चीज़ पर हो मगर ताज़िया पर रख कर या उस के सामने होना जेहालत है और उस पर चढ़ाने के सबब तबर्रुक समझना हिमाकत है। हां ताज़िया से जुदा जो खालिस सच्ची निय्यत से हज़राते शोहदाए करबला रदियल्लाहु अन्हुम की नियाज़ हो वह जरूर तबर्रुक है।

वहाबी खबीस उसे खबीस कहता है खुद खबीस है। (जिल्द 24सफा496)

मजीद इरशाद फरमाते हैं हज़रत इमामे हुसैन की नियाज़ खानी चाहिए और ताज़िया का चढ़ा हुआ खाना नही खाना चाहिए ताज़िया पर चढ़ाने से हजरत इमामे हुसैन की नियाज़ नहीं हो जाती और अगर नियाज़ दे कर चढ़ाएं या चढ़ा कर नियाज़ दिलाये तो उस के खाने से एहतेराज़ (यानी बचना) चाहिए। (जिल्द 24सफा524)

मुफ्ती मुहम्मद खलील खां बरकाती कादरी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं माहे मुहर्रम में दस दिनों तक खुसूसन दसवीं को हजरत सय्यिदुना इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु व दिगर शोहदाए करबला को ईसाले सवाब करते हैं। कोई शरबत पर फातिहा दिलाता है। कोई मिठाई पर, कोई रोटी गोश्त पर, कोई खिचड़ा पकवाता है। बहुत से पानी और शरबत की सबील लगा देते हैं जाड़ों (यानी सरदियों) में चाय पिलाते हैं यह सब जायज़ हैं। इन को नाजायज़ नहीं कहा जा सकता। (सुन्नी बहश्ती ज़ेवर हिस्सा सोम 318 319

शैखुल हदीस हजरत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफा आज़मी रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फरमाते हैं मुहर्रम के दस दिनों में खुसूसन आशूरा के दिन शरबत पिला कर, खाना खिला कर, शीरीनी पर या खिचड़ा पका कर शोहदाए करबला की फातिहा दिलाना और उन की रूहों को सवाब पहोंचाना यह सब जायज़ और सवाब के काम हैं और सब चीजों का सवाब यकीनन शोहदाए करबला की रूहों को पहोंचता है।और उस फातिहा व ईसाले सवाब के मसअले में हन्फी शाफई मालेकी हम्बली अहले सुन्नत के चारों इमाम का इत्तेफाक है।

(अक्बुल अकाइद 172)

पहले ज़मानों में फिरकए मोतज़िला और इस ज़माने में फिरकए वहाबिया इस मसअले में अहले सुन्नत के खिलाफ हैं और फातिहा व ईसाले सवाब से मना करते रहते हैं ।तुम मुसलमानाने अहले सुन्नत को लाज़िम है कि हरगिज़ हरगिज़ न उन की बातें सुनो, न उन लोगों से मेल जोल रखो वरना तुम खुद भी गुमराह हो जाओगे और दूसरों को भी गुमराह करोगे। (जन्नती जेवर सफीना सुफा 100) (25)

सवाल :– अहले तशी (शिया) की मजलिसों में जाकर सुन्नी मुसलमानों को बयाने शहादत सुनना चाहिए या नहीं ?

जवाब :–आला हजरत अलैहिर्रहमह फरमाते हैं अहले तशीअ की मरसिया ख्वानी की मजलिस में अहले सुन्नत वल जमाअत का शरीक व शामिल होना हराम है। वह बद ज़बान नापाक लोग अकसर तबर्रा (बुरा भला गाली देना) बक जाते हैं इस तरह के जाहिल सुनने वालों को खबर भी नहीं होती (उन की मजलिस) रिवायत मौज़ूअह और कलमाते शनीअह (यानी मन घड़त बातों और बुरे अलफाज़ों) और मातम हराम से खाली नहीं होती और यह देखेंगे सुनेंगे और मना न कर सकेंगे ऐसी जगह जाना हराम है। (फतावा रजविया शरीफ जदीद जिल्द 23 सफा526)

(26) सवालः–शिया कहते हैं हम मुहर्रम में जो कुछ करते हैं सब अहले बैत, शोहदाए करबला की मुहब्बत में करते हैं उसका क्या जवाब है ?

जवाब:–खतीबे पाकिस्तान हजरत मौलाना मुहम्मद शफी औकाडवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं । सियाह कपड़े पहनना, कपड़ों का फाड़ना ग्रिबान चाक – चाक करना, बाल बिखेरना, सर पर खाक डालना, सीना कूबी करना और रानों पर हाथ मारना और घोड़ा और ताजिया वगैरह निकालना यह सब नाजाईज़ व हराम है और बातिल है। अगर यह बातें जायज़, दलीले मुहब्बत और बाईसे सवाब होतीं तो इमाम जैनुल आबिदीन या दिगर अइम्मए अहले बैत रदियल्लाहु अन्हुम उन को करते । कोई साबित नहीं कर सकता कि उन्होंने ऐसा किया हो । बल्कि उन से इन (कामों) की मुमानिअत है।

(27) क्या मैदाने करबला में हज़रत कासिम रदियल्लाहु अन्हु की शादी हुई थी या नहीं ?

जवाब:– आला हज़रत इमाम अहमद रजा रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं । मैदाने करबला में यह शादी होना साबित नहीं।

(फतावा रजविया 24 स 501)

(28) सवाल:–इमामे हुसैन और दिगर शोहदाए करबला के हालात और शहादत के वाकियात बयान करना कैसा है ?

जवाब :– आला हजरत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं जिकरे शहादत शरीफ जबकि रिवायात मौजूआ (यानी मन घड़त रवायात) और कलिमाते ममनूआ न हो और निय्यत ना मश्रूअह (गलत अलफाज़ और नाजायज निय्यत) से खाली हो ऐन सआदत है स्वालिहीन के जिक्र पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है। (फतावा रजविय्या24 स 517)

मजीद इरशाद फरमाते हैं जो मज्लिस जिक्रे शरीफ हजरत सय्यिदुना इमामे हुसैन व अहले बैत किराम रदियल्लाहु अन्हुम की हो । जिस में रिवायाते सहीहा मोअतबर से उन के फजाएल व मनाकिब और मदारिज बयान किए जायें और मातम व तजदीदे गम वगैरह उमूर मुखाइफा शरअ से यकसर (बिल्कुल) पाक हो फी नफसिही हसन व महमूद है। ख्वाह उस में नज़म पढ़ें या नस्र ।

(फतावा रजविय्या24 स 523)

मुफ्ती मुहम्मद खलील खां बरकाती क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं अश्रए मुहर्रम में मज्लिस मुनअक़िद करना और वाक़ियाते करबला बयान करना जायज़ है। जब्कि रिवायाते सहीहा बयान की जाए । और इन वाक़ियात में सब्र व तहम्मुल रज़ा व तस्लीम का बहुत मुकम्मल दर्स है। और पाबन्दिए अहकामे शरीअत और इत्तेबाए सुन्नत का ज़बर दस्त अमली सबूत है। कि दीने हक़ की हिफाज़त में तमाम अज़ीज़ों, रफीक़ों और खुद अपने को राहे खुदा में कुरबान किया और जज़अ फज़अ का नाम भी न आने दिया मगर इस मज्लिस में सहाबए किराम रिज़वानल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का जिक्रे खैर होना चाहिए । ताकि अहले सुन्नत और शिय्यों की मज्लिस में यह फर्क़ और इम्तियाज़ रहे इन मजालिस में लोग इज़हारे गम के लिए सर के बाल बिखेरते हैं कपड़े फाड़ते हैं सर पर खाक डालते हैं यह सब नाजायज़ और जाहिलियत के काम हैं सुन्नी मुसलमानों को इन से बचना निहायत ज़रूरी है। अहादीस में इनकी सख्त मुमानिअत आई है। मुसलमान मर्दों और औरतों पर लाज़िम है कि ऐसे उमूर से बचें और ऐसे काम करें जिन से अल्लाह व रसूल अज़्ज़ व जल्ल व स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम राज़ी हों कि यही निजात का रास्ता है।

(सुन्नी बहश्ती ज़ेवर हिस्सा चहारुम सफा 449 550)

29 सवाल :— शाहेदाए करबला रदियल्लाहु अन्हो के ईसाले सवाब के लिए जो खिचड़ा पकाया जाता है। यह पकाना कहां से साबित है ? क्या यह पकाना ज़रुरी है ?

जवाब:—आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं। जहां से शादी का पुलाउ, दअवत का ज़रदा साबित हुआ यह तखसीसात गर्ज़िया है न कि शरइय्या हां जो उसे (यानी खिचड़ा पकाने को) शरअन ज़रुरी जाने वह बातिल है। (फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 24 सफा 494)

अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं आशूरा के दिन खिचड़ा पकाना फर्ज़ या वाजिब नहीं है। लेकिन

उसके हराम व नाजाइज़ होने की भी कोई दलील शरई नहीं है। बल्कि एक रिवायत है कि खास आशूरा के दिन खिचड़ा पकाना हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की सुन्नत है। चुनांचे मन्कूल है कि जब तूफान से निजात पाकर हजरते नूह अलैहिस्सलाम की कशती जूदी पहाड़ पर ठेहरी तो आशूरा का दिन था । आप ने कश्ती में से तमाम अनाजों को बाहर निकाला तो फोल (बड़ी मटर) गेहूं, जौ, मसूर, चना, चावल, प्याज़ सात किस्म के गल्ले मौजूद थे । आप ने सातों अनाजों को एक ही हांडी में मिलाकर पकाया । चुनांचे अल्लामा शहाबुद्दीन कलयूबी ने फरमाया कि मिस्र में जो खाना आशूरा के दिन तबीखुल हुबूब (खिचड़ा) के नाम से पकाया जाता है। उस की असल दलील यही हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अमल है।

(30) सवालः--सुना है खिचड़े को हलीम नही कहना चाहिए क्या यह बात दुरूस्त है ?

जवाब :--शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इलियास अत्तार कादरी इरशाद फरमाते हैं। अवामुन्नास खिचड़े को हलीम कहते हैं लेकिन मुझे हलीम कहने में मज़ा नही आता । मैं अल्लाह तआला के अदब के तौर पर खिचड़ा को हलीम कहना पसन्द नही करता, तो उर्दू में इस गिज़ा को खिचड़ा ही कहते हैं तो खिचड़ा नाम होते हुए अल्लाह का नाम एक गिजा पर क्यूं इस्तेमाल क्या जाए खिचड़े को हलीम कहना नाजाईज नही लेकिन हलीम कहना वाजिब भी नही है। (माखूज़ अज़ बयान आडियो कैसिट मुहर्रम के फज़ाएल)

हम इश्क के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है।

31 सवालः--मुहर्रम शरीफ की दस तारीख को किया जाने वाला कोई खास अमल या वज़ीफा हो तो वह भी बता दें ?

जवाब :--खास तौर से नवाफिल और दुआए आशूरा पढ़ें दुआ यह है--

दुआए आशूरा : बहुत ही मुजर्रब है। हज़रते इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख़्स 10 मुहर्रम को तुलूअ आफ़ताब से ग़ुरूब आफ़ताब तक इस दुआ को पढ़ ले या पढ़वा कर सुन ले तो इंशाअल्लाह तआला यक़ीनन साल भर तक उसकी हरगिज़ मौत न आएगी और अगर मौत आनी ही होगी तो अजीब इत्तेफ़ाक़ है इस दुआ को पढ़ने या उसे तौफ़ीक़ नहीं न होगी।

ایک سال تک زندگی کا بیمہ (دعائے عاشورہ)

یہ دعا بہت مجرب ہے۔ حضرت امام زین العابدین رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ جو شخص عاشورہ محرم کو طلوع آفتاب سے غروب آفتاب تک اس دعا کو پڑھے یا کسی سے پڑھوا کر سنے تو ان شاء اللہ تعالیٰ یقیناً سال بھر تک اس کی زندگی کا بیمہ ہو جائے گا۔ ہرگز موت نہ آئے گی اور اگر موت آنی ہی ہے تو عجیب اتفاق ہے کہ پڑھنے کی توفیق نہ ہوگی۔

دعائے عاشورہ

یا قابل توبة آدم یوم عاشوراء یا فارج كرب ذی النون یوم عاشوراء یا جامع شمل یعقوب یوم عاشوراء یا سامع دعوة موسى وهارون یوم عاشوراء یا مغیث ابراهیم من النار یوم عاشوراء یا رافع ادریس الى السماء یوم عاشوراء یا مجیب دعوة صالح فی الناقة یوم عاشوراء یا ناصر سیدنا محمد صلى الله علیه وسلم یوم عاشوراء یا رحمن الدنیا والآخرة ورحیمهما صل على سیدنا محمد وعلى آل سیدنا محمد وصل على جمیع الانبیاء والمرسلین واقض حاجاتنا فی الدنیا والآخرة واطل عمرنا فی طاعتك ومحبتك ورضاك واحینا حیوة طیبة وتوفنا على الایمان والاسلام برحمتك یا ارحم الراحمین۔ اللهم بعز الحسن واخیه وامه وابیه وجده وبنیه فرج عنا ما نحن فیه۔

پھر سات بار پڑھے سبحان الله ملء المیزان ومنتهى العلم ومبلغ الرضى وزنة العرش لا ملجا ولا منجا من الله الا الیه۔ سبحان الله عدد الشفع والوتر وعدد كلمات الله التامات كلها نسالك السلامة برحمتك یا ارحم الراحمین۔ وهو حسبنا ونعم الوكیل۔ نعم المولى ونعم النصیر۔ ولا حول ولا قوة الا بالله العلی العظیم۔ وصلى الله تعالى على سیدنا محمد وعلى آله وصحبه وعلى المؤمنین والمؤمنات والمسلمین والمسلمات عدد ذرات الوجود وعدد معلومات الله والحمد لله رب العالمین۔

अ–फ मिन अहलुल कुरा से खासिरुन तक उसकी बरकत व फजीलत शैखुल हदीस अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आज़मी इरशाद फरमाते हैं मुहर्रम की पहली तारीख़ को इन तीनों आयतों को कागज़ पर लिख कर और पानी से धोकर जिस घर के गोशों मे छिड़क दिया जाए वह सांप बिच्छू और तमाम मूज़ी जानवरों से सलामत रहेगा । (मक्बूलुल कुरआन सफा 272)

बानिए दावते इस्लामी मौलाना इलियास क़ादरी अत्तारी शम्सुल मआरिफ मुतरजिम सफा 74 के हवाले से इरशाद फरमाते हैं बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम. यकुम मुहर्रमुल हराम को 130 बार लिख कर या लिखवाकर जो कोई अपने पास रखे या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेगज़ीन या चमड़े में सिलवाकर पहन ले इंशाअल्लाह उमर भर उसको या उसके घर में किसी को कोई बुराई न पहोंचे ।

अहम मसअलह :– सोने या चांदी या किसी भी धात की डिब्बिया में तावीज़ पहनना मर्द को जाईज़ नहीं। इसी तरह किसी भी धात की ज़न्जीर ख्वाह इस में तावीज़ हो या न हो मर्द को पहनना नाजाईज व गुनाह है। इसी तरह सोने चांदी और स्टील वगैरह किसी भी धात की तख्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुआ हो या न हो अगरचे अल्लाह का मुबारक नाम या कलिमा वगैरह खुदाई किया हुआ हो उसका पहनना मर्द के लिए नाजाईज़ है। औरत सोने या चांदी की डिबिया में तावीज़ पहन सकती है।

नोट–एक और खास बात :– आयत या तस्मिया लिखने में जबर ज़ेर पेश लगाने की जरुरत नहीं जब भी पहनने या पीने या लटकाने के लिए बतौर तावीज़ कोई आयत या इबारत लिखो तो दाएरे वाले हरुफ के दाएरे खुले रखने होंगे मसलन लफ्ज़े अल्लाह में हे का और

रहमान और रहीम दोनों में मीम का दाएरा खुला रखें ।

(फैज़ाने बिस्मिल्लाह सफा 69, 70, और 136, 137,)

(32) सवालः— यज़ीद को पलीद कह सकते हैं ?

जवाबः— आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फ़तावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 10 सफा 194 पर और जिल्द 28 सफा 52 पर यज़ीद को पलीद लिखा है । मज़ीद एक मुकाम पर आला हज़रत फरमाते हैं यज़ीद बे बाक पलीद था। उसे पलीद कहना और लिखना जाईज़ है। (फतावा रज़विय्या 14 स 603)

(तफ़सीली मालूमात के लिए मुसन्निफ आबे कौसर मुफ्ती मुहम्मद अमीन साहब की किताब यज़ीद कौन था मुलाहिज़ा फरमाइए)

33 सवालः— यज़ीद को काफिर कह सकते या नहीं ?

जवाबः— आला हज़रत फरमाते हैं यज़ीद के बारे में अइम्मए अहले सुन्नत के तीन कौल हैं।

(1) इमाम अहमद रदियल्लाहु अन्हु के नज़दीक काफिर है इस सूरत में उस की बख्शिश नही होगी ।

2 इमाम गिज़ाली रदियल्लाहु अन्हु वगैरह उसे मुसलमान तस्लीम करते हैं तो उस पर कितना ही अज़ाब हो बिल आखिर बख्शिश ज़रुर होगी ।

3 इमामे आज़म अबू हनीफा रदियल्लाहु अन्हु इस मुआमिले में सुकूत फरमाते हैं कि न हम मुसलमान कहें न काफिर लिहाज़ा इस में हम भी सुकूत करेंगे (माखूज़ अज़ फतावा रज़विया शरीफ जदीद जिल्द 14 सफा602)

(34) सवालः—सुना है कि इमाम ज़ैनुल आबिदीन ने यज़ीद को मग़फिरत के वास्ते किसी खास तरीके से नमाज़ पढ़ने की तालीम फरमाई थी ?

जवाबः—आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं यह रिवायत महज़ बे असल है हज़रत ने कोई नमाज़ इस पलीद की मग़फिरत के लिए उसको तालीम नहीं फरमाई (फतावा रज़विय्या शरीफ जदीद 28 सफा 62)

35 सवालः—यज़ीद पलीद को बुरा कहना जाइज़ है या नही ?

जवाब:–मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाहु अलैह फरमाते हैं बे बाक यज़ीद खबीस को बुरा कहना जाईज़ है।

(फतावा फैज़ुर्रसूल हिस्सा अव्वल सफा 26)

36 सवाल: यज़ीद की मौत हालते कुफ्र पर हुई या हालते ईमान पर ?

जवाब:– मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाहु अलैहि फरमाते हैं यज़ीद की मौत हालते कुफ्र पर हुई या हालते ईमान पर इसे अल्लाह व रसूल ही जानते हैं। (फतावा फैज़ुर्रसूल हिस्सा अव्वल सफा 26)

37 सवाल :,वहाबी, देवबन्दी आम तौर पर कहते हैं कि यज़ीद ने अगरचे हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो को शहीद करवाया मगर वह जन्नती है इस लिए कि बुखारी शरीफ में हदीस है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो कुस्तुन्तुन्या पर हमला करेगा वह बख्शा हुआ है और कुस्तुन्तुन्या पर पहला हमला करने वाला यज़ीद है लिहाज़ा वह बख्शा बख्शाया हुआ पैदाईशी जन्नती है। तो वहाबियों देवबन्दियों की इस बकवास का जवाब क्या है ?

जवाब :– मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं यज़ीद पलीद जिस ने मस्जिदे नबवी और बैतुल्लाह शरीफ की सख्त बे हुरमती की, जिस ने हज़ारों सहाबए किराम व ताबिईने इज़ाम रदियल्लाहु तआला अन्हुम का बे गुनाह कत्ले आम किया और जिस ने मदीनए तय्यबा की पाक दामन ख्वातीन को तीन शबाना रोज़ अपने लश्कर पर हलाल किया और जिस ने फरज़ंदे रसूल जिगर गोशए बतूल हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को तीन दिन बे आब व दाना रख कर पियासा ज़िबह किया . ऐसे बद बख्त और मरदूद यज़ीद को जो लोग बख्शा बख्शाया हुआ पैदाइशी जन्नती कहते हैं और सबूत में बुखारी शरीफ की हदीस का हवाला देते हैं वह

अहले बैते रिसालत के दुशमन खारजी और यज़ीदी हैं इन बातिल परस्त यज़ीदियों का मकसद यह है कि जब यज़ीद की बख्शिश और उस का जन्नती होना हदीस शरीफ से साबित है, तो इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु का ऐसे शख्स की बैअत न करना और उस के खिलाफ अलमे जिहाद बुलंद करना बग़ावत है और सारे फित्नए व फसाद की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर है,(नउजिबिल्लाहि मिन ज़ालिक) वहाबी देवबन्दी यज़ीद पलीद के जन्नती होने के मुतअल्लिक जो हदीस पेश करते हैं उस के अस्ल अल्फाज़ यह हैं । नबीए अकरम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो कैसर के शहर कुस्तुन्तुन्या पर हमला करेगा वह बख्शा हुआ है। (बुखारी शरीफ जिल्द अव्वल सफा 410)

अल्लाह के महबूब दानाए गुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फरमाने हक है। लेकिन कैसर के शहर कुस्तुन्तुन्या पर पहला हम्ला करने वाला यज़ीद है। वहाबियों और देवबन्दियों का यह कहना ग़लत है इस लिए कि यज़ीद ने कुस्तुन्तुन्या पर कब हमला किया इस के बारे में चार अक्वाल हैं सन49 हिजरी सन 52 हिजरी और 55 हिजरी जैसा कि कामिल इब्ने असीर जिल्द सोम सफा 131 हिदाया निहाया जिल्द हश्तुम 32 ऐनी शरह बुख़ारी जिल्द चहारुम दहुम और असाबा जिल्द अव्वल सफा 405 में हैं । साबित हुआ कि यज़ीद सन 49 हिजरी से 55 हिजरी तक कुस्तुन्तुन्या की किसी जंग में शरीक हुआ चाहे सिपह सालार वह रहा हो या हजरत सुफियान बिन औफ और वह मामूली सिपाही रहा हो मगर कुस्तुन्तुन्या पर इस से पहले हमला हो चुका था जिस के सिपह सालार हजरत अब्दुर्रहमान बिन खालिद बिन वलीद थे और उनके साथ हजरत अबू अय्यूब अन्सारी भी थे (रदियल्लाहो अन्हुम) जैसा कि अबू दाउद शरीफ किताब अलजिहाद सफा 340 की हदीस से ज़ाहिर है और अब्दुर्रहमान बिन खालिद

रदियल्लाहु अन्हु का इन्तेकाल सन 46 सन 47 हिजरी में हुआ जैसा कि हिदाया निहाया जिल्द हश्तुम सफा 31, कामिल इब्ने असीर जिल्द सोम सफा 229 और असदुलगाबा जिल्द सोम 440 में है। मालूम हुआ कि आप का हमला कुस्तुन्तुन्या पर सन 46 हिजरी या 47 हिजरी से पहले हुआ और तारीख की मुअत्तबर किताबें शाहिद हैं कि यजीद कुस्तुन्तुन्या की एक जंग के इलावह किसी में शरीक नही हुआ तो साबित हो गया कि हजरत अब्दुर्रहमान ने कुस्तुन्तुन्या पर जो पहला हमला किया था यजीद उस में शरीक नही था । तो फिर हदीसे अव्वल जै शे मिन उम्मती में यजीद दाखिल नही हुआ और जब वह दाखिल नही तो इस हदीस की बशारत का भी वह मुस्तहिक नही और चूंकि अबू दाउद शरीफ सिहाहे सित्ता में से है इस लिए आम कुतुब तारीख के मुकाबले में इसी की रिवायत को तरजीह दी जाएगी । रही यह बात कि हजरत अबू अय्यूब अन्सारी रदियल्लाहु अन्हो का इन्तेकाल उस जंग में हुआ कि जिसका सिपहसालार यजीद था। तो उस में कोई खलजान नही इस लिए कि कुस्तुन्तुन्या का पहला हमला जो हजरत अब्दुर्रहमान रदियल्लाहु अन्हु की सरकर्दगी में हुआ आप इस में शरीक रहे और फिर बअद में जब उस लशकर में शरीक हुए कि जिसका सिपहसालार यजीद था तो कुस्तुन्तुन्या में आप का इन्तेकाल हो गया , इस लिए कि कुस्तुन्तुन्या पर मुतअद्दिद बार इस्लामी लश्कर हमला आवर हुआ है। और अगर यह तस्लीम भी कर लिया जाए कि कुस्तुन्तुन्या पर हमला करने वाला जो लश्कर था। उस में यजीद मौजूद था फिर भी यह हरगिज साबित न होगा कि उस के सारे करतूत मआफ हो गए और वह जन्नती है। इस लिए कि हदीस शरीफ में भी है जब दो मुसलमान आपस में मुसाफहा करते हैं तो जुदा होने से पहले इन दोनों को बख्श दिया जाता है । (तिर्मिजी शरीफ जिल्द2 सफा 97)

और हुजूर सय्यदे आलम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है

कि जो माहे रमज़ान में रोज़ेदार को इफ्तार करवाए उसके गुनाहों क
लिए मगफिरत है । (मिश्कात सफा 147)
और सरकारे अक्दस स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस यह भ
है। कि रोज़े वगैरह के सबब माहे रमज़ान की आखिरी रात में इस
उम्मत को बख्श दिया जाएगा । (मिश्कात सफा174)

लिहाज़ा अगर वहाबियों देवबन्दियों की बात मान ली जाए त
इन अहादीसे करीमा का यह मतलब होगा कि मुसलमान स
मुसाफहा करने वाले, रोजेदार को इफ्तार करवाने वाले और मा
रमजान मे रोज़ा रखने वाले सब बख्शे बख्शाए जन्नती हैं अब अग
वह हरमैन तय्यबैन की बेहुरमती करें मुआफ, कअबा शरीफ क
(मआज़ल्लाह) खोद कर फेंक दें मुआफ, मस्जिदे नबवी में गिलाज
डालें मआफ, हज़ारों बे गुनाह को क़त्ल कर डालें मुआफ, यहां त
कि अगर सय्यिदुल अम्बिया मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलै
वसल्लम के जिगर पारों को तीन दिन का भूका, पियासा रख क
जिबह कर डालें तो वह भी मुआफ, और जो चाहें करें सब मुआफ ।
(नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक)
खुदाए अज़्जो वजल्ल यज़ीद नवाज़ वहाबियों देवबन्दियों को सह
समझ अता फरमाए और गुमराही व बद मज़हबी से बचने क
तौफीक रफीक बख्शे, आमीन (फतावा फैज़ुर्रसूल जिल्द दोम सफा 711-712)
38 सवालः यज़ीद पलीद के वालिदे मोहतरम जनाब हज़रते अमी
मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के बारे में उलमाए इस्लाम क्या फरमाते हैं
जवाब :— मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाहि अलै
फरमाते हैं, आप का नाम मुआविया और कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान
वालिद की तरफ से आपका सिलसिलए नसब यह है। मुआविया बिन
अबू सुफियान सख्र बिन हरब बिन उमय्या बिन अब्दे शम्स बिन अब
मुनाफ और वालिदा की तरफ से नसब यूं है, मुआविया बिन हिन्द बिन
उत्बा बिन रबीआ बिन अब्दे शम्स बिन अब्दे मुनाफ नबीए करी

स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चौथे दादा हैं इस लिए कि हुजूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए नसब यह है इब्ने अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ. खुलासा यह हुआ हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो वालिद की तरफ से पांचवी पुश्त में और वालिदह की तरफ से भी पांचवी पुश्त में हुजूर अकदस स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिलसिलए नसब मे आपके चौथे दादा अब्दे मनाफ से मिल जाते हैं। जिस से जाहिर हुआ कि आप नसब के लिहाज से हुजूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के करीबी अहले कराबत मे से हैं और रिश्तेदार में रसूले करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हकीकी साले हैं इस लिए कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफ्यान रदियल्लाहु अन्हा जो हुजूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजए मोहतरमा हैं वह हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो की हकीकी बहन हैं इसी लिए आरिफे बिल्लाह मौलाना रुमी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी मस्नवी शरीफ में आप को तमाम मोमिनों का मामूं तहरीर फरमाया है। (खुत्बाते मुहर्रम स 293 294)

शैखुल हदीस हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं। हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो बहोत ही खुबसूरत गोरे रंग वाले और निहायत ही वजीह और रुआब वाले थे । चुनांचे अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हो फरमाया करते थे कि "मुआविया" अरब के 'किसरा' हैं, हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो चूंकि बहुत ही उमदा कातिब थे इस लिए दरबारे नबुव्वत में वही (कलामे इलाही) लिखने वालो की जमाअत में शामिल कर लिए गए. इस्लाम में बहरी (समुन्द्री) लड़ाई के ईजाद करने वाले आप हैं, जंगी बेड़ों की तामीर का कारखाना भी आप ने बनवाया , खुश्की और समुन्द्री फौजों को बेहतरीन तन्ज़ीम फरमाई और जिहादों की बदौलत इस्लामी हुकूमत की हुदूद वसीअ तर करते रहे और इशाअते इस्लाम का दाएरा

बराबर बढ़ता रहा। जा बजा मसाजिद की तामीर और दर्सगाहों का क़याम फरमाते रहे। (कराम्ते सहाबा सफा 184 186)

हकीमुल उम्मत ताजदारे गुजरात मुफस्सिरे शहीर हजरत अल्लामा मौलाना मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फरमाते हैं हजरत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु खास सुलह हुदैबिया के दिन सात हिजरी में इस्लाम लाए, मगर मक्का वालों के खौफ से अपना इस्लाम छुपाए रहे फिर फत्हे मक्का के दिन अपना इस्लाम ज़ाहिर फरमाया जिन लोगों ने कहा है कि वह फत्हे मक्का के दिन ईमान लाए वह ज़ुहूरे ईमान के लिहाज़ से कहा, जैसे हजरते अब्बास रदियल्लाहु अन्हो दरे परदा जंगे बद्र के दिन ही ईमान ला चुके थे। मगर एहतियातन अपना ईमान छुपाए रहे और फत्हे मक्का में ज़ाहिर फरमाया तो लोगों ने उन्हें भी फत्हे मक्का के मोमिनों में शुमार कर दिया हालांकि आप क़दीमुलइस्लाम थे।

हजरते अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो निहायत दियानतदार सखी सियासतदान काबिल हुकमरां वजीह सहाबी थे। आप ने अहदे फारुकी व अहदे उस्मानी में निहायत काबिलियत से हुकमरानी की, हजरत उमर फारुक व उस्माने गनी रदियल्लाहु अन्हुमा आप से निहायत खुश रहे, हजरते अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो नबीए करीम स्वल्लाहु अलैहि वसल्लम के कातिबे वही भी और कातिबे खुतूत भी थे यानी जो नामा व प्यामा सलातीन वगैरह से हुजूर नबीए करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे वह अमीर मुआवियह से लिखवाते थे, हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हो ने अमीर मुआवियह रदियल्लाहु अन्हो की बहुत मौके पर तारीफें फरमाई हैं जैसे कि दमिश्क का हाकिम मुकर्रर किया और माजूल न फरमाया अगर आप थोड़ी सी भी लग़ज़िश मुलाहेजा फरमाते तो फौरन माजूल फरमा देते ,जैसे कि मामूली शिकायत पर सअद इब्न अबी वक़ास या ख़ालिद बिन वलीद जैसी बुजुर्ग हस्तियों को माजूल फरमा दिया ।

इसी तरह हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहु अन्हो ने अपने ज़मानए

ख़िलाफत में हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो को हुकूमत के उहदे पर बहाल रखा यह उन बुजुर्ग सहाबा की तरफ से हजरते अमीरे मुआविया रदियल्लाहु अन्हो की इन्तेहाई अज़मत व अमानत का इकरार व एलान है। इमामे हसन रदियल्लाहु अन्हो ने सात माह खिलाफत फरमाकर हजरते अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो के हक में खिलाफत से दस्तबर्दारी फरमाई और उनका सालाना वज़ीफा और नज़राने कुबूल फरमाए , अगर अमीरे मुआविया में मामूली फिस्क (गुनाह) भी होता तो इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो सर दे देते मगर उनके हाथ में हाथ न देते , नबिए करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इमाम हसन रदियल्लाहु अन्हो के इस फेअल शरीफ (अच्छे काम) की तारीफ फरमाई थी कि मेरा बेटा सय्यद है। अल्लाह तआला इसके जरिये मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों में सुलह फरमाएगा इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो इस सुलह के वक्त आकिल बालिग समझदार थे, मगर उन्होंने इस सुलह पर एतेराज़ न फरमाया, अगर अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो की निगाह में कुछ ऐब रखते होते तो यज़ीद मर्दूद की तरह आप उस वक्त अमीरे मुआविया रदियल्लाहु अन्हो के मुकाबले में आ जाते, मालूम हुआ कि निगाहे इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो में यज़ीद फासिक फाजिर ज़ालिम वगैरह था, अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो आदिल सिकह, मुत्तकी बैअते अमारत थे। अब किसी को क्या हक है कि इन पर ज़बान तअन दराज़ करे । हजरत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो को यह शर्फ हासिल है कि आपने बड़े जलीलुल कद्र सहाबा से अहादीस रिवायत की जो तमाम मुहद्दिसीन ने कबूल कीं और अपनी कुतुब में लिखीं और बड़े बड़े सहाबा किराम अलैहिमुर्रिजवान ने हजरत अमीर से रिवायत लीं और अहादीस नकल कीं, ख़्याल रहे कि फासिक की रिवायत ज़ईफ (कम्ज़ोर) होती है। यानी काबिले कबूल नहीं होती, बवक्ते वफात हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने वसिय्यत फरमाई कि मेरे

पास नबीए करीम स्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ नाखून शरीफ हैं वह बअदे गुस्ले कफन के अन्दर मेरी आंखों पर रख दि जाएं और कुछ बाल मुबारक और हुजूर स्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तहबंद , हुजूर की चादर और कमीज़ शरीफ है। मुझे हुजूर की कमीज़ में कफन देना, हुजूर स्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाद लपेटना, हुजूर की चादर लपेटना, हुजूर का तहबंद मुझे बांध देन और मेरी नाक, कान वगैरह पर हुजूर के बाल शरीफ रख देना फि मुझे अरहमुर्राहिमीन के सुपुर्द कर देना।

हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो के दिल में अल्ला का खौफ, हुजूर स्यल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अजमत, अह बैत अत्हार की मुहब्बत कमाल दरजा थी। अल्लाह अज्ज़ो वजल्ल की उन पर रहमत हो और उनके सदके हमारी मगफिरत हो आमीन। (हजरत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो पर एक नजर सफा 40, 57)

39 सवाल:– जो लोग यज़ीद पलीद की वजह से हजरत अमी मुआविया रदियल्लाहु अन्हो को बुरा कहते हैं उनके बारे में उलमा इस्लाम क्या फरमाते हैं ?

जवाब:–मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैहि फरमा हैं कहीं से साबित नहीं होता कि अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो की हयात में यजीद फासिक व फाजिर था या ये जानते हुए अपन जानशीन किया । यजीद का फिस्क़ व फुजूर हजरत अमी मुआविया रदियल्लाहु अन्हो (की वफात) के बाद जाहिर हुआ अ अगर कोई ऐसी रिवायत मिल भी जाए जिस से मालूम हुआ कि अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो ने यज़ीद के फिस्क फुजूर से ख़बरदार होते हुए उसे अपना खलीफा मुकर्रर फरमाया तो व रिवायत ओठी हैं। और रावी शिय्या है। या कोई दुशमने अस्हाब ए रिवायत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो या किसी सहाबी व फिस्क साबित करे वह मर्दूद है क्योंकि कुर्आन के खिलाफ है।

तमाम सहाबा बहुक्मे कुरआनी मुत्तकी हैं । बहर हाल जब अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो का वक्ते वफात करीब आया तो यजीद ने पूछा कि अब्बा जान ! आप के बाद खलीफा कौन होगा तो आप ने कहा कि खलीफा तो तू ही बनेगा मगर जो कुछ मैं कहता हूं उसे गौर से सुन कोई भी काम इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो के मशवरह के बगैर न करना (यानी वह तेरे वज़ीरे आज़म हैं), उन्हें खिलाए बिगैर न खाना , उन्हें पिलाए बगैर न पीना, सब से पहले उन पर खर्च करना फिर किसी और पर , पहले उन्हें पहनाना फिर खुद पहन्ना , तुझे इमामे हुसैन और उनके घर वालों, उनके कुंबे बल्कि सारे बनि हाशिम के लिए अच्छे सुलूक की वसिय्यत करता हूं।

ऐ बेटे! खिलाफत में हमारा हक नहीं वह इमामे हुसैन उनके वालिद और उन के अहले बैत का है। तो तू चंद रोज खलीफा रहना फिर जब इमामे हुसैन पूरे कमाल को पहुंच जाएं तो फिर वही खलीफा होंगे या जिसे वह चाहें ताकि खिलाफत अपनी जगह पहुंच जाए । हम सब इमाम हुसैन और उनके नाना के गुलाम हैं । उन्हें नाराज न करना वरना तुझ पर अल्लाह व रसूल नाराज होंगे और फिर तेरी शफाअत कौन करेगा बल्कि हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने दुआ की कि मौला अगर यजीद उस का अहल न हो तो उस की सलतनत कामिल न फरमा फिर ऐसा ही हुआ कि यजीद मर्दूद हजरत अमीर मुआविया के बाद दो साल कुछ माह जिन्दा रहा और उस की सलतनत पाए तकमील को न पहोंच सकी।

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र 03,74,76)

तो मालूम हुआ अमीर मुआविया जब तक जिन्दा रहे यजीद बड़ा नेक परहेज़गार था बाद वफाते वालिद उस ने गुनाहों का बाज़ार गरम किया जुल्म व सितम किए लिहाज़ा अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो हरगिज़ हरगिज़ मोरिदे इल्ज़ाम नही ठेहराये जा सकते । तो अब जो उन पर ज़बाने तअन दराज़ करे उस के बारे में उलमा फरमाते हैं वह जहन्नमी है। वह जहन्नमी कुत्तों में से एक कुत्ता है। (फतावा कैसुर्रसूल हिस्सा जनाल सफा 129)

नोटः– हजरत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो के बारे में तफसीली मालूमात हासिल करने के लिए मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैह की किताब 'अमीर मुआविया पर एक नज़र ' का मुतालआ फरमाएं।

40 सवालः– बअज़ सय्यद साहेबान भी कम इल्मी की वजह से हजरत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो को अच्छा नही समझते, उन्हें किस तरह समझाया जाए?

जवाबः– उलमा फरमाते हैं जो सय्यद साहेबान सुन्नी उलमा के बयानात सुनने के बजाए, सुन्नी उलमा की सोहबत में बैठने के बजाए शिया हजरात के साथ उठना बैठना, मेल जोल रखते हैं वह हजरात अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो पर ज़बाने एतेराज दराज़ करते हैं ऐसे सय्यद साहेबान तक हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो के बारे में सही मालूमात पहुंचाई जाए तो अपने आबा व अजदाद की तरह यह भी इन्शाअल्लाह उन की तारीफ व तौसीफ करेंगे एक वाकिया पेशे खिदमत है इस से भी कुछ दर्स मिलेगा।

एक सय्यद साहब का बयान है कि मुझे हजरत अलीए मुर्तज़ा शेरे खुदा रदियल्लाहु अन्हो से जंग करने वालों से और खुसूसन हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो से बहोत एतेराज़ था। एक रात हजरत मुजिदद अलफेसानी कुत्बे रब्बानी शैख सरहन्दी रदियल्लाहु अन्हो के मक्तूबात शरीफ का मुतालआ कर रहा था। दौराने मुताला यह इबारत पढ़ी , इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हो को बुरा कहने को हज़रत अबू बकर सिद्दीक और हज़रत उमर फारूक (रदियल्लाहु तआला अन्हुम) को बुरा कहने के बराबर क़रार दिया है।

इस इबारत से मैं आजुर्दा हो गया और मैं ने मक्तूबात शरीफ को ज़मीन पर डाल दिया और सो गया , ख्वाब (सपने) में किया देखा कि हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी रहमतुल्लाह अलैह बहुत गुस्से की हालात में तश्रीफ लाए और मेरे दोनो कान अपने हाथों से पकड़ कर फरमाया, ऐ बेवकूफ बच्चे! तू हमारी तहरीर पर एतेराज़ करता है।

और हमारे कलाम को जमीन पर फेंकता है अगर तुझे हमारी बात पर यकीन नही है तो चल तुझे हजरत अली रदियल्लाहु अन्हो की खिदमत में ले चलते हैं । हज़रत मुजद्दिद अलफेसानी रहमतुल्लाह अलैह मुझे एक बाग में ले गए, मैं ने देखा कि ऐक बुजुर्ग वहां एक इमारत में तशरीफ रखते हैं हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी रहमतुल्लाह अलैह ने उन बर्जुग के आगे तवज्जो की तो उन बुजरुग ने बहोत खुशी का इजहार फरमाया। हज़रत मुजद्दिद अलफेसानी रहमतुल्लाह अलैह ने मेरी बात उन बुजरुग को बताई फिर मुझ से फरमाया कि यह हजरत अली रदियल्लाहु अन्हो है सुनो आप क्या फरमाते हैं।

मैंने सलाम अर्ज किया हज़रत अली शेरे खुदा रदियल्लाहु अन्हो ने फरमाया खबरदार खबरदार! कभी भी हुजूर सल्लल्लाहो अलैही व सल्लम के सहाबा से अपने दिल मे बुग्ज ना रखना और उनकी ऐब जोई ना करना क्योंकि हम जानते हैं और हमारे भाई (सहाबए किराम) भी जानते हैं की हम लोग किस बात को हक समझ कर एतिराज कर रहे थे फिर हजरत मजद्दिद अलिफ सानी रहमतुल्लाह अलैह की तरफ इशारा कर के फरमाया की इनकी बात को हर कीमत पर तसलीम करना । (खज़ीनए करामाते औलिया सफा 301,302)

41 सवाल:— जो ये कहे की हजरत अली रदिअल्लाहु अन्हो के बराबर किसी सहाबी का मरतबा नही, हजरते अली रदिअल्लाहु अन्हो सब सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम से अफज़ल हैं उसके बारे में शरीअत का क्या फैसला है?

जवाब:— आला हजरत इमाम अहमद रजा खान रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं जो ये अकीदा रखे वो अहले सुन्नत से खारिज और एक गुमराह फिरके तफजीलिया में दाखिल है जिनका अइम्मएदीन ने राफिज़ियों (शिय्यों) का छोटा भाई कहा है।

मुसन्निफ बहारे शरिअत खलीफए आला हजरत फरमाते है। बादे अम्बिया वा मुरसलीन तमाम मख्लुकाते इलाही इन्सा व जिन्न व मलक से अफजल सिद्दीके अकबर हैं फिर उमर फारूक फिर उस्माने

सिद्दीक या फारूक या उस्माने गनी से अफज़ल बताये वो गुमराह बद मज़हब है (बहारे शरीअत सफा 124,125)

मरकज़ुल औलिया लाहौर के ताजदार दाता गंजबख्श अली हिजवेरी रहमतुल्लाह अलैह अपनी मशहूर व मारूफ किताब कशफुल महजूब में इरशाद फरमाते हैं सय्यिदुना सिद्दीके अकबर रदिअल्लाहु अन्हु का रुतबा अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के बाद सारी मखलूक़ से अफज़ल व मुक़द्दम है (कशफुल महजुब सफा 116)

तवज्जोह फरमाएं जो तमाम सहाबाए किराम को खैर यानी भलाई से याद करता हो खुलफाए अरबआ (4) की इमामत बरहक़ जानता हो सिर्फ मौला अली को हजराते शैखैन यानी अबू बकर सिद्दीक और हजरत उमर फारूके आज़म से अफज़ल मानता हो तो ऐसा शख्स बद मज़हब ज़रूर है लेकिन काफिर नही ।

(फतावाह रज़विया शरीफ जिल्द 11 सफा 346)

42 सवालः– जो हजरत अली शेरे खुदा को किसी नबी से अफज़ल या बराबर कहे उसके बारे में शरई हुक्म क्या है?

जवाबः– आला हजरत फरमाते हैं जो किसी गैर नबी को किसी नबी से अफज़ल बताऐ वो काफिर है (फतावाह रज़विया शरीफ जिल्द 11 सफा245)

अबू स्वालेह मुफ्ती मुहम्मद क़ासिम साहब क़ादरी अत्तारी मद ज़िल्लहु फरमाते हैं जो (किसी भी) गैरे नबी को नबी से अफ्ज़ल या उसके बराबर माने वह काफिर है। लिहाज़ा जो हजरत अली को नबियों से अफज़ल माने या बराबर मानने वाला हो काफिर है।

(किताब ईमान की हिफाज़त सफा 56,57)

43 सवालः–जो यह अकीदह रखे कि कुरआन जिस तरह नाज़िल हुआ था अब वैसा नही है इस में कमी बेशी तब्दीली हो चुकी है उसके बारे में शरीअत का क्या हुक्म है ?

आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं जो कुरआने अज़ीम के एक लफ्ज़ एक हर्फ एक नुक़्ते की निस्बत गुमान करे कि मआज़ल्लाह सहाबए किराम या अहले सुन्नत ने घटा या बढ़ा दिया, बदल दिया वह क़तअन काफिर है।

(माखूज़ अज़ फतावा रज़विया शरीफ जिल्द11 सफा 691)

मुफ्ती कासिम कादरी बरकाती दामत बरकातहुमुल आलिया किताब ईमान की हिफाज़त में तहरीर फरमाते हैं। अगर कोई यह दावा करे कि जो कुरआने पाक नबीए करीम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया गया है वह हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हो और उन की औलाद होने वाले इमामों के पास महफूज़ है और यह कुरआन जो हमारे पास है तहरीफ शुदह है जिस को अनकरीब इमाम मुन्तज़िर आ कर जला देगा तो वह काफिर है। कुरआने मजीद में जो एक लफ्ज़, एक हर्फ और एक नुक्ते की कमी बेशी का क़ाएल है यकीनन वह काफिर व मुर्तद है। (ईमान की हिफाज़त स 73 74)

मुफ्ती अमजद अली फरमाते हैं जो शख्स कुरआन मजीद को नाकिस कहे वह काफिर है।

44 सवाल:--उलमाए इस्लाम ने आशूरा (मुहर्रम की दसवी रात) की क्या खुसूसियत बयान फरमाई है?

जवाब:--शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत हजरत अल्लामा मौलाना इलियास अत्तार कादरी दामत बरकातहुमुल आलिया "या शहीदे करबला हो दूर हर रंज व बला "के पच्चीस हुरुफ की निस्बत से आशूरा की पचीस खुसूसियत बयान फरमाई है।

(1) 10 मुहर्रमुल हराम आशुरा के रोज़ हजरत सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल हुई (2) उसी दिन उन्हें पैदा किया गया (3) उसी दिन उन्हें जन्नत में दाखिल किया गया (4) उसी दिन अर्श (5) कुर्सी (6) आसमान (7) ज़मीन (8) सूरज (9) चांद (10) सितारे और (11) जन्नत पैदा किए गए (12) उसी दिन हज़रत सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम पैदा हुए (13) उसी दिन उन्हें आग से निजात मिली (14) उसी दिन मूसा अलैहिस्सलाम और आप की उम्मत को निजात मिली और फिरऔन अपनी कौम समेत ग़र्क हुआ (15) उसी दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा किए गए (16) उसी दिन उन्हे आसमानों की तरफ उठाया गया (17) उसी दिन नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती

जूदी पहाड़ पर ठेहरी (18) उसी दिन सुलैमान अलैहिस्सलाम को मुल्के अजीम अता किया गया (19) उसी दिन हजरत सय्यिदुना यूनुस अलैहिमुस्सलाम मछली के पेट से निकाले गए (20) उसी दिन हजरत सय्यिदुना याकूब अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम की बीनाई की कमजोरी दूर हो गई (21) उसी दिन हज़रत सय्यिदुना यूसुफ अलैहिमुस्सालातो वस्सलाम गहरे कुंए से निकाले गए (22) उसी दिन हजरत अय्यूब अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम की तकलीफ रफअ (दूर) की गई (23) आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और (24) उसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मशहूर था यहां तक कि यह भी कहा गया कि उस दिन का रोज़ा माहे रमज़ानुल मुबारक से पहले फर्ज़ था फिर मन्सूख़ कर दिया गया

(मुकाशिफ़तुल कुलूब सफा 311)

(25) इमामुल हुमाम इमामे आली मुकाम इमामे अर्श मुक़ाम इमामे तिश्नए काम सय्यिदुना इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो को व मअ शहज़ादगान व रुफ़काअ तीन दिन भूका रखने के बाद उसी आशूरा के रोज़ दश्ते करबला में इन्तेहाई सफ्फाकी के साथ शहीद किया गया।

(फ़ैज़ाने रमज़ान सफा 509, 510)

45 सवाल:– मुहर्रमुल हराम शरीफ और आशूरा के रोज़ों के फज़ाएल क्या हैं?

जवाब:–हजरत सय्यिदुना अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं रमज़ान के बाद मुहर्रम का रोज़ा अफज़ल है और फर्ज़ के बाद नमाज़ सलातुल्लैल (यानी रात के नवाफिल) है।(सही मुस्लिम सफा 891 हदीस1163)

अल्लाह के हबीब स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमाने रहमते निशान है मुहर्रम के हर दिन का रोज़ा एक महीनो के रोज़ों के बराबर है।

(तिबरानी कबीर जिल्द 2 सफा 87 हदीस 1580)

हजरत सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हो का इरशादे गिरामी है। रसूलुल्लाह स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मदीना शरीफ में तशरीफ लाए तो यहूद को आशूरा के दिन रोज़ादार

पाया तो इरशाद फ़रमाया यह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अर्ज़ की यह अज़मत वाला दिन है कि इस में मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम और उन की कौम को अल्लाह तआला ने निजात दी और फ़िरऔन और उस की कौम को डुबो दिया । लिहाज़ा मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बतौर शुकराना इस दिन का रोज़ा रखा। तो हम भी रोज़ा रखते हैं । इरशाद फरमाया मूसा अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की मुवाफ़िक़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़्यादा हक़दार और ज़्यादा क़रीब हैं तो सरकारे मदीना स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी रोज़ा रखा और उस का हुक्म भी फरमाया हुजूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया यौमे आशूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुखालिफत करो । इस से पहले या बअद में भी एक दिन का रोज़ा रखो ।

(मसनद इमाम अहमद जिल्द 1 सफ़ा 518 हदीस 2154)

आशूरा का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं या ग्यारहवीं मुहर्रमुलहराम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

हजरत सय्यिदुना अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हुजूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं मुझे अल्लाह पर गुमान है कि आशूरा का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है ।

(सही मुस्लिम सफ़ा 590 हदीस 1162)

46 सवाल :- आशूरा के रोज़ मजीद क्या क्या करना चाहिए ?

जवाब:- मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत ताजदारे गुजरात हजरत अल्लामा मौलाना मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं जो बाल बच्चों के लिए दसवीं मुहर्रम को खूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो इन्शाअल्लाह अज़्ज़ वजल्ल साल भर तक घर में बरकत रहेगी । जो 10 मुहर्रमुल हराम को गुस्ल करे तो तमाम साल इन्शाअल्लाह अज़्ज़ो वजल्ल बीमारियों से अमन में रहेगा। क्योंकि इस दिन आबे ज़मज़म तमाम पानियों में पहोंचता है।

(तफसीर रूहुल बयान जिल्द 4 सफ़ा 142 इस्लामी ज़िन्दगी सफ़ा 93)

Scanned by CamScanner

हुजूर स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स यौमे आशूरा इस्मद सुर्मा (एक खास सुर्मा) आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी (शेअबुल ईमान जिल्द 3 सफा 367 हदीस 3797)

1 रोज़ा रखना 2 सदका करना 3 नफ्ल नमाज़ पढ़ना 4 हज़ार बार सूरह इख्लास पढ़ना 5 उ–लमाए किराम की ज़ियारत करना 6 यतीम के सर पर हाथ फेरना 7 अपने घर वालों के रिज़्क मे बढोतरी करना 8 गुस्ल करना 9 सुर्मा लगाना नाखून तराशना 10 मरीजों की बीमार पुर्सी करना और दुशमनों से मिलाप करना दुआए आशूरा पढ़ना ।

नोटः– दुआए आशूरा नमाज़ की हिन्दी किताब अज़कारे नमाज़ में मिलेगा और पाकिस्तानी पन्जसुरह में भी मिलेगा ।

47 सवालः– आशूरा की रात नफ्ल नमाजें पढ़ने की फज़ीलत और तरीका क्या है।

जवाबः–आशूरा की रात में चार रकात नमाज़ नफ्ल इस तरकीब से पढ़े कि हर रकात में अल्हम्दु के बाद आयतल कुर्सी एक बार और सूरह इख्लास (कुल हुअल्लाहु अहद) तीन तीन बार पढ़े और नमाज़ से फारिग होकर एक सौ मर्तबा कुल हुवल्लाहु अ–हद की सूरत पढ़े गुनाहों से पाक होगा और बहिश्त में बे इन्तेहा नेअमतें मिलेंगी (इन्शाअल्लाह)

(जन्नती जेवर तखरीज शुदा सफा 157)

48 सवालः–आशूरा के रोज़ सदका व खैरात करने से क्या सवाब है ?

जवाब :– सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गिज़ाली रदियल्लाहु अन्हो इरशाद फरमाते हैं तिब्रानी की रिवायत है। उस दिन एक दिरहम का सदका करना सात लाख दिरहम के सदका से अफज़ल है।

49 सवाल :– दस मुहर्रम को दुआए आशूरा पढ़ने की क्या फज़ीलत है ? नीज़ दुआए आशूरा और उसको पढ़ने का तरीका भी बताएं ?

जवाबः– शैखुल हदीस हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफा आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह इरशाद फरमाते है दसवीं मुहर्रम को दुआए आशूरा

पढ़ने से उमर में खैर व बरकत और ज़िन्दगी में फलाह व नेअमत हासिल होती है। (जन्नती जेवर तख़रीज शुदा सफ़ा 159)

क़ारी रज़ाउल मुस्तफा दामत बरकातहुमुल आलिया इरशाद फरमाते हैं एक साल तक ज़िन्दगी का बीमा हो जाता है ।

दुआए आशूरा : यह दुआ बहुत मुजर्रब है। हज़रत इमाम जैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि जो शख्स आशूरए मुहर्रम को तुलूए आफताब के बाद से गुरूब आफताब से पहले तक इस दुआ को पढ़ ले या किसी से पढ़वाकर सुन ले तो इन्शाअल्लाह यक़ीनन साल भर तक उस की ज़िन्दगी का बीमा हो जाएगा हरगिज़ मौत न आएगी और मौत आनी ही है तो अजीब इत्तिफाक है कि पढ़ने की तौफीक़ न होगी (गंजीनए बरकात सफ़ा 106,107)

50 सवालः– अहले तशीअ (शियों) के बारे में उ–लमाए किराम किया फरमाते हैं ?

जवाब :– आला हजरत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत हजरत अल्लामा मौलाना अल्हाज अल्हाफिज़ अल्कारी मुफ्ती इमाम अहमद रज़ा ख़ान फाज़िले बरैलवी रदियल्लाहु अन्हो इरशाद फरमाते हैं शिया हज़रात कुरआन मजीद को नाकिस व ना मुकम्मल कहते हैं और हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हो और बाक़ी अइम्मए अतहार को तमाम साबिका अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से अफज़ल समझते हैं (यह दोनो अक़ीदे कुफ्र है) लिहाज़ा किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह इन पलीद और गलीज़ (गन्दा) लोगों के कुफ्र में शक करे और यह क़तअन बिल इजमाअ काफिर व मुर्तद हैं इन से निकाह महज़ बातिल और औलाद, औलादे ज़िना।

(माख़ूज़ अज़ फतावा रज़विय्या शरीफ जदीद जिल्द 20 सफ़ा 78 ता 81)

फक़ीहे मिल्लत हज़रत मौलाना मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहमतुल्लाहि अलैहि इरशाद फरमाते हैं शिया हज़रात काफिर व मुर्तद हैं। उन के हाथ का ज़बीहा मुर्दार है उन के साथ मुनाकिहत यानी निकाह न सिर्फ हराम बल्कि ख़ालिस ज़िना है उनके मर्द व औरत आलिम जाहिल किसी से मेल जोल सलाम कलाम सख्त

कबीरा अशद हराम है।

(माखूज अज फतावा फैजुर्रसूल जिल्द दोम सफा 613 हिस्सा अव्वल सफा 604 ता606)

मुफ्तिए आज़म पाकिस्तान मुफ्ती मुहम्मद वकारुद्दीन कादरी रज़वी रहमतुल्लाहि अलैहि इरशाद फरमाते हैं शिया हजरात उम्मुल मोमिनीन हज़रत बीबी आयशा सिद्दीका तय्यबा ताहिरा रदियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमतें लगाते हैं । हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर फारुक रदियल्लाहु अन्हो की खिलाफत को न सिर्फ इनकार करते हैं बल्कि मआज़ल्लाह उन्हें खाइन (यानी खियानत करने वाला) और गासिब (यानी गसब करने वाला) कहते हैं इस लिए उनका इस्लाम से कोई तअल्लुक नहीं उन्होंने अपना कलमा भी इलाहिदा कर लिया है और अजान मे भी तबदीली कर ली है किसी मुसलमान का निकाह किसी शिया से नही हो सकता है शिया मजहब मे तकिया फर्ज़ है और तकिया का माना झूठ बोलने और धोखा देने के हैं इस लिए शियों की कोई बात काबिले कबूल नही मुसलमानों को उन के धोखे में नही आना चाहिए ।

(माखूज अज फतावा वकारुल फतावा जिल्द दोम सफा 30 ता 32)

नोट : शिया फिरके के अकाइद की तफसीली मालूमात व हवाला जानने के लिए शैखुल इस्लाम ख्वाजा कमरुद्दीन सियालवी रहमतुल्लाह अलैह की तस्नीफ किताब "मजहबे शिया "या अल्लामा मुहम्मद अली रहमतुल्लाह अलैहि की "अकाईदे जाफरिया " या अल्लामा मुहम्मद उमर अछरवी रहमतुल्लाह अलैह की "मकयासुल खिलाफत "और अल्लामा मुहम्मद अशरफ सियालवी की तोहफए हुसैनिया का मुतालेआ कीजिए ।

मुसन्निफ – अबुलहसन सय्यद एहसानुल्लाह शाह बुखारी अत्तारी (कोरंगी केराची पाकिस्तान) 0312 2546026

तर्जुमा :– मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान कादरी जगदा शाही बस्ती यू. पी. खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ छिन्दवाड़ा मध्य प्रदेश

सवाल:–51 इस्लाम में जिहाद क्यों रखा गया है – यह जो वहशयाना काम है और अमन बर्बाद करने में क्या फायदे है ?

जवाब :– जिहाद में बहोत हिकमतें हैं चन्द हसबे जैल है जिन का वजूद अमन के लिए खतरा हो – उन को दबा देना, मिटा देना, गोया अमन कायम करना है, हुकूमतें, बदमाशों को सज़ाएं देती है, ताकि नेक लोग अमन से रहें । खेत से घास दूर की जाती है ताकि फसल के जुअफ (कमजोरी) न पहोंचे । गला, सड़ा, अंग काट दिया जाता है ताकि तन्दुरुस्त अंग को खराब न करे । कुफ्फार दुनिया के लिए गोया घास या जिस्मे दुरुस्त में खराब अंग हैं । मर्दे मोमिन गोया फसल या तन्दुरुस्त जिस्म है। इन को मग़लूब करना नेकों को अमन देना है। जिहाद से कौमी कुव्वत पैदा होती है जिस से कौम बा इज़्ज़त जिन्दगी बसर कर सकती है जिहाद से इबादतों करने की आज़ादी हासिल होती है । तलवार के साये में मस्जिदें कायम और इस्लामी एहकाम जारी हो सकते हैं तलवार कुरआन का रास्ता साफ करती है और कुरआन तलवार को बे महल चलने से रोकता है जैसे तन्दुरुस्ती के लिए बीमारी के अस्बाब दुर करना लाज़िम है ऐसे ही दीनी कुव्वत के लिए गलबए कुफ्र मिटा देना जरुरी है ।

सवाल:–52 क्या जिहाद से यह मकसद है कि कुफ्फार फना (खत्म) कर दिए जायें ?

जवाब :–नहीं, बल्कि यह कि कुफ्र का गलबा तोड़ दिया जाये अगर जिहाद से कुफ्फार का मिटाना मकसूद होता है तो आज हिन्दुस्तान में एक काफिर नजर न आता – क्योंकि यहां आठ सौ साल इस्लामी सलतनत रह चुकी है अल्लाह की ज़मीन पर मुसलमानों को भी रहने हक है कुफ्फार यह गवारा नहीं करते हैं। जिहाद के ज़रिया मुसलमानों को उनका यह जाईज़ हक दिलवाया जाता है ।

सवाल:–53 जिहाद को जिहाद क्यों कहते हैं ?

जवाब– जिहाद जुहद से बना है इस का मअना है मुशक्कत । चूं कि तमाम इबादत से यह ज़्यादा मुश्किल है कि इस में सफर भी है जान का खतरा भी है मुसीबतों का झेलना भी है ।

लिहाज़ा इसे जिहाद कहा गया है यानी मुशक्कत वाली इबादत । इसी लिए इसका सवाब भी ज़्यादा है कि मार के आए तो गाजी, मर गया तो शहीद, लौट आया तो ईद ।

सवालः–54 शहीद को शहीद क्यों कहते हैं ?

जवाब :– शहीद के मअना है हाज़िर है । क्योंकि दिगर लोग कियामत के बाद जन्नत में हाज़िर होंगे और शहीद मरते ही सब्ज परिन्दों की शक्ल में जन्नत में पहोंच जायेंगे और वहाँ का रिजक खाते हैं लिहाजा शहीद यानी हाज़िर है या इस लिए कि शहीद को बारगाहे इलाही में हाजिर करके पूछा जाता है कि कुछ तमन्ना कर । अर्ज करेगा कि मुझे फिर दुनिया में भेजा जाये । ताकि फिर शहीद किया जाउं इस लिए कि जो लज़्ज़त खाक व खून में तड़पने में मिली वह कभी न मिली । हुक्मे इलाही होता है कि हम एक बार पास करके दोबारा इम्तेहान नही लिया करते ।

सवालः–55 शहीद का इस्लाम में क्या दर्जा है ?

जवाब :– नबुव्वत के बाद सिद्दीकियत है सिद्दीकियत के बाद शहादत है–रब फरमाता है। मिनन नबिय्यी–न वस्सिद्दीक–न वश्शुहदाइ वस्सालिही–न । शहीद पर नबी की खास तजल्ली है कि नबी की नींद वजू नहीं तोड़ती है और शहीद की मौत गुस्ल नही तोड़ती है। नबी के फुज़लात उम्मत के लिए पाक और शहीद का खून पाक। नबी वफात शरीफ के बाद ज़िन्दा हैं और रिज़्क पाते हैं यह हदीस से साबित है और शहीद भी बादे मौत जिन्दा है यह कुरआन से साबित है।

स्वाल 56 :– शहादत का इतना अअला दर्जा क्यों है?

जवाब :– इस लिए कि सवाब बकद्र मुशक्कत मिलता है चूंकि दिगर आबिदीन राहे इलाही में अपना पैसा या वक़्त खर्च करते है शहीद जान देते हैं । और जान सब से आला है लिहाज़ा उस का अज्र भी ज़्यादा है। हुकूमतें फौज की बड़ी इज़्ज़तें करती हैं जो मारा जाए उस के बच्चों तक से सुलूक करती हैं क्यों कि उस ने अपनी जान से

हुकूमत की खिदमत की है ऐसे शहीद भी हैं।

सवाल:–57– सय्यिदुश्शु–हदा किस का लकब है। कौन हैं – अबू बकर सिद्दीक की या हज़रत उमर की या हज़रत उस्मान गनी की या हज़रत इमामे हुसैन की ?

जवाब :– इनही हज़रात में से हर एक मुखतालिफ हैसियत से सय्यिदुश्शुहदा हैं । अबू बकर फनाफिर्रसूल की हैसियत से सय्यिदुश्शुहदा हैं कि हुजूर की वफात खैबर वाले ज़हर से । सिद्दीक की वफात, गार के ज़हर से हुजूर के घर में वफात की शब चिराग में तेल नहीं और सिद्दीक के घर कफन के लिए कपड़ा नहीं । हज़रत उमर इस लिए सय्यिदुश्शुहदा हैं कि मदीने पाक में मस्जिदे नबवी में नमाज़े फज्र की मशगूलियत में हुई । और फिर हुजूरे पाक के रौज़े में दफन । और हज़रत उस्माने गनी रदियल्लाहु अन्हु इस लिए सय्यदुश्शोहदा कि मदीना पाक की ज़मीन में कुरआने पाक की तिलावत करते हुए शहीद हुए और शहादत का खून कुरआन पाक पे गिरा बगैर मुकाबला किए शहीद हुए इमाम हुसैन इस लिए सय्यिदुश्शुहदा हैं कि आप पर वक्ते शहादत मुहाजिर भी थे और मुतवातिर भी, भुके पियासे भी, घर बार को राहे इलाही में लुटाने वाले भी, और बे मिस्ल नमाज़ी भी । जिन की नमाज भी वजु तयम्मुम से बे नियाज़ है ।

सवाल:58:– वाकिए कर्बला क्यों हुआ उस में क्या हिकमतें हैं ?

जवाब :– सहाबए किराम और अहले बैते इज़ाम कुरआन की जिन्दा तफ्सीरें हैं कुरआन ने शाकिरीन के अज्र भी ब्यान किए और साबिरीन के भी । खुलफाए राशिदीन की जिन्दगी शुक्र की तफ्सीर है और हज़रत इमाम हुसैन की जिन्दगी मुबारक सब्र की तफ्सीर है और साबिर हो कर इमाम हुसैन की शहादत तफ्सीरे कुरआन की तकमील है।

सवाल:–59:– इस सब्र के लिए इमामे हुसैन ही क्यों तजवीज़ हुए ?

जवाबः– इस लिए कि इमामे हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं । जन्नती जवानों में कोई मुहाजिर होगा, कोई ग़ाज़ी होगा कोई शहीद । इमामे हुसैन कर्बला से पहले पहले बज़ाहिर न मुहाजिर थे न ग़ाज़ी न शहीद । मर्ज़ीए इलाही थी कि एक वाक़िए कर्बला नें इस जन्नती सरदार को सारे मदारिज तय करा दिये जायें । गोया करबला की तप्ती रेत उन के लिए जन्नती जवानों के सरदार होने की ट्रेनिंग स्कूल था इस लिए आप माल औलाद वतन अहबाब जान ग़र्ज़ तमाम चीजों की मसाइब (मुसीबतें) जमा कर दी गई ।

सवाल :–60:– अगर इमाम हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं तो जन्नत में सब जवान ही होंगे तो चाहिए कि आप पैग़म्बरों और सिद्दीकीन के भी सरदार हों । कि वह जन्नत के जवान हैं । मान लिया जाये कि आप उम्मती हैं नबी के सरदार नहीं हो सकते तो फिर अबू बकर सिद्दीक सब से अफजल न हुए इस लिए कि आप उन के भी सरदार हैं ?

जवाब :– जन्नती जवानों से मुराद वह जन्नती हैं जो जवानी में वफात पा जायें उन्ही के आप सरदार हैं कोई पैग़म्बर दुनियां से जवानी में न गए न ही खुलफाए राशिदीन लिहाज़ा यह हजरात इन हुक्म से खारिज हैं ।

सवालः–61:– रब ने यह मुसीबतें क्यों रखी हैं वह बन्दो को मुशक्कत में क्यों डालता है?

जवाब :–इन मुसीबतों से खरे खोटे की पहचान होती है जिस तरह असली सोना कसौटी पर मालूम होता है जंग के मैदान ईमान की कसौटियां हैं ।

सवालः–62:–कसौटी पर वह परखे जो आलिमुल ग़ैब न हो रब जब आलिमुल ग़ैब है तो उसे इम्तेहान की क्या जरुरत है ?

जवाब :– इम्तेहान कभी देखने के लिये होता है कभी दिखाने के लिये होता है । रब के इम्तेहानात दूसरे मकसद के लिये है ताकि कल

क़ियामत में जज़ा देते वक़्त किसी को एअतिराज़ का मौक़ा न मिले।
सवाल:–63:– तो चाहिए कि सारे मुसलमान मुजाहिद और ग़ाज़ी हुआ करें बग़ैर जिहाद के जन्नत न मिला करे वरना मख़्लूक़ को एअतिराज़ होगा । नीज़ बग़ैर मुसीबत गुनाहों से सफ़ाई न होगी ?
जवाब:– इम्तेहान तक़रीबन सब का होता है किसी को आराम दे कर किसी को मुसीबत में डाल कर ' नौइयत इम्तेहान का जुदागाना है। अय्यूब अलैहिस्सलाम इम्तेहाने सब्र में कामयाब हुये और सुलैमान अलैहिस्सलाम शुक्र में । हम गुनहगारों का भी यही हाल है किसी को देकर इम्तेहान है किसी से ले कर इम्तेहान है ।
सवाल:–64:–इमामे हुसैन के क़ातिल कौन थे सुन्नी या शिया ?
जवाब:–उन के क़ातिल ख़ालिस शिया थे उनके तीन दलाइल हैं एक यह कि क़ातिलाने इमामे हुसैन अहले कूफ़ा हैं और कूफ़ा ही में हज़रत अली मुर्तज़ा का दारुल ख़िलाफ़ा रहा और उनका जाये क़याम था ज़ाहिर है कि शिया जमाअत वहां ही रहती होगी और आज भी लखनउ और अवध शियों का मरकज़ इस लिये है कि वहां शिया सलातीन रहे और अगर शिया कूफ़ा में आबाद न थे तो बताओ कहां थे दूसरे यह कि अब भी शिया जमात में तक़िया दाख़िले फ़िदीन है हालांकि उस वक़्त किस ने तक़िया न किया ? उबैदुल्लाह बिन ज़्याद ने कहा कि मैं बसरे से हिजाज़ी लिबास पहन कर हिजाज़ के रास्ता से कूफ़ा पहोंचा ताकि लोग समझें कि इमामे हुसैन आ गये । तीसरे यह कि आज भी मुहर्रम में शिया वह ही काम करते हैं जो उस वक़्त यज़ीदियों ने किये थे । इमाम का जनाज़ा निकालना अलम व ताज़िया का जुलूस में नाच कूद, अहले बैत ने यह काम नही किये ।
सवाल:– 65 :– शिया मातम में सीना क्यों पीटते हैं क्या उस की कोई असल है बाज़ जगह ज़न्जीर व तलवार से मातम होता है ?
जवाब:–इस लिए कि उन के सीनों में अदावते सहाबए किराम भरी है ।

वह सीने पीटने के ही काबिल हैं यहां खुद पीटते हैं आखिरत में उन सीनों को फरिशते कूटेंगे ज़ालिकल अज़ाबुल आखिरतु अक्बर । अगर यह सीना कूबी इज़हारे मुहब्बत का तरीका होता । तो उन से ज्यादा अहले बैत की मुहब्बत रखने वाले इमाम ज़ैनुलआबिदीन थे । वह नेज़ों व बरछियों से मातम किया करते ।

सवालः—66:—शहीदों को जिन्दा क्यों फरमाया गया ?

जवाब :— इस लिए कि उन्होंने अपनी फानी जिन्दगी राहे हक में कुर्बानी की। लिहाज़ा उन्हें बाकी और जावेदानी जिन्दगी अता हुई। इबादत के मुताबिक़ जज़ा अता हुई।

(51 से 66 तक अनवारुल हदीस कुरआन से माखूज़ है)

सवाल :— 67 :—कर्बला जाने वाले अहले बैत की तादाद (गिन्ती) कितनी है ?

जवाबः—हज़रत इमामे हुसैन की दो बीवियां थीं आप के साथ एक शहर बानो और दुसरी हज़रत असगर की वालिदा और हज़रत इमामे हसन के चार साहबज़ादे थे 1. हज़रत कासिम 2. हज़रत अब्दुल्लाह 3. हज़रत उमर 4. और हज़रत अबू बकर यह चारो हज़रत इमामे हुसैन के साथ शहीद हुए।

और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहुल करीम के पांच फरज़न्द 1 हज़रत अब्बास बिन अली 2. हज़रत उस्मान बिन अली 3 हज़रत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली 4 हज़रत मुहम्मद बिन अली और 5 हज़रत जअफर बिन अली सब ने शहादत पाई ।

और हज़रत अकील के फरज़न्दों में से हज़रते मुस्लिम तो हज़रते इमामे हुसैन के करबला पहोंचने से पहले ही कुफा में शहीद हो गए और तीन फर्ज़न्द हज़रत अब्दुल्लाह हज़रत अब्दुर्रहमान और हज़रत जअफर इमामे हुसैन के हमराह करबला हाज़िर हो कर शहीद हुए ।

सवाल 68:— हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहुल करीम की कितनी औलादें हैं और कितनी बीवियां हैं ?

जवाब: हज़रत फातमतुज़्ज़ुहरा रदियल्लाहु अन्हा की वफात के बाद हज़रत अली ने मुखतलिफ वक़्तों में आठ औरतों से निकाह किया इस तरह आप की कुल नौ बीवियां हैं जिन से पन्दरह साहबज़ादे (लड़के) और 17 साहबज़ादियां (लडकियां) पैदा हुई ।

बीवियां 1 सय्यदा फातमा 2 खैला 3 लैला 4 उम्मुलबनीन 5 उम्मे वलद 6 असमा 7 उम्मे हबीबा 8 अमामा 9 उम्मे सअद

साहबज़ादे 1 हसन 2 हुसैन 3 मुहसिन 4 मुहम्मद अक्बर (अलमारुफ मुहम्मद बिन हन्फिया) 5 अब्दुल्लाह अकबर 6 अबू बकर 7 अब्बास अकबर 8 उस्मान 9 जअफर 10 अब्दुल्लाह असग़र 11 मुहम्मद औसत 12 यहया 13 औन 14 उमर अकबर 15 मुहम्मद असग़र

सहबज़ादियां 1 उम्मे कुलसूम 2 जैनबुल कुबरा 3 रुक़य्या 4 उम्मुल हसन रमलतुल कुबरा 5 उम्मेहानी 6 मैमूना 7 अमामा 8 रमलतुस्सुग़रा 9 उम्मे कुलसूमसुग़रा 10 फातमा 11 खदीजा 12 उम्मुलखैर 13 सुग़रा 14 उम्मे सलमा 15 उम्मे जअफर16 जमान 17 तक़िया ।

सवाल :—69:— कुछ लोग एतेराज़ करते हैं कि अमीर मुआविया ने हज़ारों मुसलमानों को क़त्ल किया और कराया । अगर यह हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु से जंग न करते तो मुसलमानों का इतना क़त्ल न होता और मोमिन को क़त्ल करने वाला हमेशा जहन्नम में रहेगा अल्लाह का इरशाद है पारह 5 रुकू 10 जो शख्स किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है जिस में वह हमेशा रहेगा लिहाज़ा अमीर मुआविया इस आयात में दाखिल हैं ?

जवाब :—इस सवाल के दो जवाब हैं पहला जवाब इलज़ामी है और वह यह है कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु अन्हा, हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर रदियल्लाहु अन्हुम पर भी यही इल्ज़ाम आईद हो सकता है इस लिए कि इन लोगों ने हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु

से जंग की है जिस में हजारों मुसलमान शहीद हुए । जब कि हज़रत आयशा सिदीका रदियल्लाहु अन्हा का जन्नती होना ऐसा यकीनी है जैसा कि जन्नत का होना इस लिए कि उन के जन्नती होने पर कुरआन की आयत शाहिद (गवाह) है और हज़रत तलहा और हजरत जुबैर रदियल्लाहु अन्हु भी कतअन जन्नती हैं इस लिए कि यह दोनों हजरात अशरए मुबश्शरह मे से हैं ।

दूसरा सवाल का तहकीकी जवाब है और वह यह है कि मोमिन के कत्ल की तीन सूरतें हैं एक तो यह है कि उस के कत्ल को हलाल समझे और यह कुफ्र है इस लिए कि मोमिन का कत्ल हराम कतई है और हराम कतई को हलाल समझना कुफ्र है और आयते करीमा में कत्ल यही सूरत मुराद है इस लिए कि कुफ्र वाला ही जहन्नम मे हमेशा रहेगा न कि ईमान वाला ।

दूसरे यह कि मोमिन के कत्ल को हलाल नही समझना मगर दुनयावी झगड़े में उसे कत्ल कर दिया । यह कुफ्र नहीं है। बल्कि फिस्क और गुनाह कबीरा है जैसे हलाल न समझते हुए शराब पीना और नमाज़ का कसदन तर्क कर देना और तीसरी वजह खताए इज्तेहादी से एक मोमिन का दूसरे मोमिन को कत्ल करना यह न कुफ्र है न फिस्क । और हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु की जंग इसी तीसरी किस्म में दाखिल है । आप मुज्तहिद थे और मुज्तहिद अपने इज्तेहाद मे खता करे तो उस पर कोई मुआख़िज़ा नहीं ।

सवाल :70 जब रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे को कत्ल से न बचा सके तो दूसरे को किसी मुसीबत से क्या बचा सकते है ?

जवाबः– अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नवासे हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को शहीद होने से बचाने की कोशिश ही नही फरमाई। इस लिए कि आप उनके लिए क़त्ल से महफूज़ रहने के लिए दुआ नही की । और जब आपने उन को शहीद होने से बचाने की कोशिश ही नही फरमाई तो फिर यह कहना सिरे से गलत है कहना कि अपने नवासे को क़त्ल से नही बचा सके

जैसे कि हमारा कोई आदमी दरया में डूब रहा हो और हमारे पास डूबने से बचाने के लिए कश्ती वग़ैरह तमाम सामान मुहय्या हो मगर हम बचाने के कोशिश न करें तो यह कहना गलत है कि हम बचा न सके । हां अगर हम बचाने की कोशिश करते और न बचा पाते तो अलबत्ता यह कहना सही होता कि हम नही बचा सके । तो अल्लाह के महबूब सय्यदे आलम स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे को बचाने की कुदरत रखने के बावजूद उन को बचाने की कोशिश नही फरमाई । लिहाजा यह कहना गलत है कि उनको नही बचा सके । खुदा तआला समझ अता फरमाए । और बअज़ गुस्ताख जो यह कहते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु जो सय्यिदुल अम्बिया के नवासे हैं और सहाबी हैं जिन के दरजा को बड़ा से बड़ा वली और ग़ौस व कुतुब नहीं पहोंच सकता जब वह अपनी और अपने व अकारिब की जान नही बचा सके । तो दूसरा कोई ग़ौस व कुतुब किसी की क्या मदद कर सकता है तो इस एतराज़ का जवाब है कि इमाम हुसैन मैदाने करबला में जान बचाने के लिए नही गए थे बल्कि अपनी जान दे कर इस्लाम बचाने गए थे ।

जान बचाना तो आप के लिए आसान था इस लिए कि जान बचाने के लिए जब हराम कतई का खाना पीना और झूठ बोलना जाईज़ हो जाता है तो आप भी जान बचाने की खातिर थोड़ी देर के लिए यज़ीद की झूठी बैअत कर लेते और जब दुशमन की गिरफ्त से आज़ाद हो जाते तो इन्कार कर देते ।

सवाल:-71 सवाल मुहर्रम में कुछ लोगों के उपर बाबा आते हैं इसकी हकीकत क्या ह?

जवाब :- इन के उपर किसी वली या पैगम्बर की रुह नही आती है । न ही किसी जिन्न या इन्सान की रुह आती है बल्कि इन के उपर शरीर जिन या शरीर इन्सान की रुहें अल्बत्ता आ सकती है जिन्हें खबीस कहते हैं यह अपने को भले ही कुछ कह लें और जो इनको माने की इनके उपर वली या पैगम्बर आते हैं और यह मान कर उन से अकीदत करते हैं और उन्हें बहुत बड़ा वली या अच्छा समझते हैं तो ऐसे लोग गुमराह हैं यह

अपनी दूकान चमकाने के लिए ढोंग करते हैं यह मक्कारी है न यह बाबा है न यह इन्सान हैं बल्कि इन्सान के भेस में शैतान है । इन से बचना अशद ज़रूरी है। और जो इन से न बचे उन को भी गुमराह कर देंगे । दुआ है कि अल्लाह तआला इन से बचाए और लोगों को इन से बचने की तौफीक अता करे।

आवाज़ आ रही है शहीदों की खाक से ।
मर कर मिली ज़िन्दगी जावेदां मुझे।।

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते ।
यह सर कट जाये या रह जाये कुछ परवाह नहीं करते ।।

ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं हक़ के नाम पर ।
अल्लाह अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया ।।

73 सवालः–हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु की शहादत कहां वाक़ेअ हुई ?

जवाबः–कर्बो बला में ।

74 सवालः– वाकिअए करबला किस तारीख में रुनुमा हुआ ?

जवाबः– दस मुहर्रमुलहराम सन 61 हिजरी में बरोज़ जुमा

75 सवालः– हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो की कौन सी बहन कर्बला में आपके साथ मौजूद थी ?

जवाबः– हज़रत ज़ैनब रदियल्लाहु अन्हा

76 सवालः– हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो ने अपना नायब बनाकर कूफा सब से पहले किसको रवाना फरमाया था ?

जवाबः– चचा ज़ाद भाई हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अकील रदियल्लाहु अन्हो को ।

77 सवालः– हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अकील रदियल्लाहु अन्हो की शहादत कब वाके हुई ?

जवाबः– 3 जुलहिज्जा को ।

78 सवालः– हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अकील रदियल्लाहु अन्हो के दोनों शहज़ादों के नाम बताइए जो कूफा में शहीद हुए ?

जवाबः– (1) हज़रत मुहम्मद (2) इब्राहीम रदियल्लाहु अन्हुमा

79 सवालः– हज़रत मुहम्मद, इब्राहीम रदियल्लाहु अन्हुमा को किस बद बख़्त ने शहीद किया ?

जवाबः– हारिस बद बख़्त नें

80 सवालः– हजरत इमाम मुस्लिम बिन अकील रदियल्लाहु अन्हो ने कूफा में सब से पहले किस के यहां क़याम फरमाया ?

जवाबः– मुख़्तार बिन उबैद सक़फी के यहां ।

81 सवालः– शहज़ादए इमाम मुस्लिम रदियल्लाहु अन्हु किस के यहां पनाह गुज़ी थे ?

जवाबः– हज़रत क़ाज़ी शुरैह के यहां ।

82 सवालः– हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हो के मक्का शरीफ से कूफा रवाना होने की तारीख़ बताईए ?

जवाबः– तीन ज़ुलहिज्जा ।

83 सवालः–खेमए अहले-बैत पर पहला तीर किस बद बख़्त ने चलाया ?

जवाब : –अम्र बिन सअद ने ।

84 सवालः– अम्र बिन सअद कौन था ?

जवाबः– जलीलुल क़द्र सहाबी हजरत सअद बिन अबी वक़ास रदियल्लाहु अन्हो का ना ख़ल्फ बेटा था।

85 सवालः– साहिले फुरात पर हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हो ने किस तारीख़ में अपना खेमा नसब फरमाया?

जवाबः– 7 मुहर्रमुलहराम को।

86 सवालः–यज़ीदियों ने हुसैनियों पर पानी किस तारीख में बन्द किया ?

जवाबः– 7 मुहर्रमुलहराम को।

87 सवालः– इमामे हुसैन रदियल्लाहु अन्हो के रुफ़क़ा की तअदाद किया थी ?

जवाबः– सिर्फ 72 नुफ़ूसे कुदसिया ।

88 सवालः– रूफकाए इमाम हुसैन रदियल्लाहु में अन्हु में अहले बैत अतहार कितने थे ?

जवाबः– इक्कीस 21 बाज़ रिवायतों में 17 अहले बैत थे ।

89 सवालः– दरियाए फुरात पर यजीदी पहरेदारों की तअदाद किया थी?

जवाबः– 40 हजार और बाज रिवायत में 22 हज़ार फौजी है ।

90 सवाल:– हजरत अली असगर रदियल्लाहु अन्हु पर जो शीर ख्वार थे किस बदबख्त ने तीर चलाया?

जवाब:– हुरमला बिन काहिल मलऊन ने।

100 सवाल:– हजरत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को किसने शहीद किया ?

जवाब:– शिम्र मलऊन ने।

101 सवाल:– कातिले हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के बारे में मैवदां रसूल स्वल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या फरमाया था ?

जवाब:– हुसैन का कातिल ऐसा शख्स होगा जिस की पीठ पर बर्स (सफेद दाग) के दाग और सुव्वर के बालों की तरह बाल होगें।

102 सवाल:– बवक्ते शहादत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के किन दो शहजादों की शहादत करबला में हुई?

जवाब:– हजरत अली अकबर व अली असगर रदियल्लाहु अन्हुम की।

103 सवाल:– बवक्ते शहादत हजरत अली अकबर रदियल्लाहु अन्हु की उम्र क्या थी?

जवाब:– 18 साल की।

104 सवाल:–अहले बैते अतहार में से एक शहजादे ने 6 माह की उम्र मे जामे शहादत नोश फरमाया क्या आप उस शहजादे का नाम बता सकते है ?

जवाब:– हजरत अली असगर रदियल्लाहु अन्हु।

105 सवाल:– हजरत उम्मे कुल्सूम ख्वाहिरे इमामे पाक व हजरत सुकैना बिन्ते हुसैन रदियल्लाहु अन्हुम की कबरें कहाँ वाके हैं?

जवाब:– दमिश्क के एहातए कब्रिस्तान में।

106 सवाल:– हजरत इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के घोड़े का नाम बताइए ?

जवाब:– यमून आप की शहादत के बाद दरियाए फुरात में डुब कर मर गया।

107 सवाल:– दरियाए फुरात के किनारे कौन सी बस्ती मे तने बे सर फरजन्दाने इमाम मुस्लिम रदियल्लाहु अन्हुम की जियारत होती हैं ?

जवाब:– करबा मुसैइब में।

108 सवालः– शुहदाए करबला मे से उस शहीद का इस्में गिरामी क्या है जो लड़ते हुए 3 मील करबला से पूरब में शहीद हुए ?

जवाबः– इमाम हुसैन के भांजे हजरत औन रदियल्लाहु अन्हु ।

109 सवालः– हजरत हुर रदियल्लाहु अन्हु की मजार करबला से कितनी दूरी पर वाके है?

जवाबः– 3 मील के फासले पर।

110 सवालः– हजरत शहर बानो जौजए इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हुमा के वालिद का नाम बताइए ?

जवाबः– शाहे ईरान यज्द जरद ।

111 सवालः–72 शोहदाए करबला के सर किस जगह दफ्न है ?

जवाबः– दमिश्क के कब्रिस्तान में।

112 सवालः– सरे हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को जिस्मे मुकद्दस से किसने जुदा किया ?

जवाबः– खौली बिन यजीद ने ।

113 सवालः– शहादते हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के बाद कबीलए अशअश के एक शख्स ने जिन्नों को नोहा करते सुना क्या आप बता सकते हैं कि जिन्नो को नोहा करते सुना क्या आप बता सकते है कि जिन्न किन अल्फाज मे नोहा करते थे ?

जवाबः– मसहर्रसूल जबीनहू फलहु बुरीकुन फि ल्खुदूदी–अबवाहु मन अलैना बज्हुहू खैरल्जुदुदी। रसूलुल्लाह स्वल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी पेशानी पर बोसा दिया जिस के रूख्सार ताबां और दरख्शां है। और उनके अजदाद आला व खैर, खानदान से ताअल्लुक रखते है ।

114 सवालः– हजरत इमाम जैनुल आबिदिन रदियल्लाहु अन्हु के नाना का नाम बताइए ?

जवाबः– यज्द जर्द ईरान का बादशाह जो नौ शेरवां की औलाद से था।

115 सवालः– बताइए हजरत इमाम जैनुल आबिदिन के साहबजादे हजरत जैद शहीद (रदियल्लाहु अन्हु) की ननिहाल कहाँ थी ?

जवाबः– हिन्दुस्तान में।

116 सवाल:-- सरजमीन रूम के एक गाजी ने एक कलीसा पर एक शेर लिखा देखा था बताइए कौन सा था ?
जवाब:-- अतर्जु उम्मतुन कतलत हुसैना शफाअत जद्देही यौमल हिसाबि
तर्जुमा -- क्या वह कौम जिस ने हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को शहीद किया उन के जद्दे अमजद से बरोजे हश्र शफाअत की उम्मीद रखती है।
117 सवाल:-- सय्यिदुना इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु को मक्का जाने का मशवरह किसने दिया था ?
जवाब:-- हजरत मोहम्मद बिन हन्फियह रदियल्लाहु अन्हु ने।
118 सवाल:-- करबलाए मोअल्ला किस इस्लामी मुल्क में वाके है।?
जवाब:-- इराक में।
119 सवाल:-- कातिलाने अहले बैत को दोजख में किस कदर अजाब दिया जाएगा ?
जवाब:-- आतिशी ताबूत में मुकफ्फल करके जहन्नम में रखे जाएगें ।
120 सवाल:सरहाए शुहदा में से बनू हवाजिन को कितने सर मिले थे ?
जवाब -- 22 ।
121 सवाल:-- इब्ने अशअस और बनी असअद के हिस्से में कितने सर आए थे ?
जवाब:-- इब्ने अशअस के हिस्से में 13 (तेरह), बनी असअद के हिस्से में 6 (छः)।
122 सवाल:-- बकिया सरों की तकसीम यजीदियों ने किस तरह की ?
जवाब:-- 14 बनी तमीम, पाँच एक और कबिला को, और 12 सर अहले लश्कर में तकसीम हुए।
123 सवाल:-- मजलूमों के सरों को कर्बला से किस बदबख्त को देखकर पहले ही रवाना कर दिया था?
जवाब:-- खौली बिन यजीद को।
124 सवाल:-- किस सानहे अजीम के मौका पर दिन में तारे नजर आए और आसमान ने खून बरसाए ?
जवाब:-- बअदे वाकिआते करबला।

125 सवाल:– गुलशने फातिमी को ताराज करने के बाद इब्ने साअद को कितने दिन बाद कूफा जाने का हुक्म किसने दिया?

जवाब:– दो दिन (12 मुहर्रमुल्हराम तक)

126 सवाल:– शहीदों के सरों का नेजों पर बुलन्द करके गश्त करने का हुक्म किसने दिया?

जवाब:– इब्ने साअद ने।

127 सवाल:– हजरत इमाम जैनुल आबेदिन रदियल्लाहु अन्हु और शाही हरमे मुहतरम अहले बैत को करबला से किस तरह रवाना किया गया ?

जवाब:– ऊँटों की नंगी पीठ पर सवार करके सबकी नकील हजरत आबिदे बीमार के हाथ में देकर रवाना किया।

128 सवाल:– मकामें हिरान के किस यहूदी ने सरे इमाम से तिलावते कुर्आन पाक की आवाज सुनी थी ?

जवाब:– यहया यहूदी ने और इस करामत की वजह से वह दाखिले इस्लाम हो गया।

129 सवाल:– सरे इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से कुर्आन मजीद की कौन सी आयत की तिलावत हो रही थी ?

जवाब:– व सयअलमुल्लजी न ज़ ल मू अय्या मुन क ल बीं यन्कलिबून।

130 सवाल:– इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु के लबहाए मुबारका पर छड़ी गस करके गुस्ताखी कौन कर रहा था ?

जवाब:– यज़ीद पलीद (इस से पहले इब्ने ज़्याद भी ऐसा कर चुका था)

131 सवाल:– यज़ीद की हरकते नाज़ेबा देख कर किस सहाबी ने एतराज़ किया था ?

जवाब:– हजरत समुरह बिन जुन्दब रदियल्लाहु अन्हु ने।

132 सवाल:– करबला का खूनी मन्ज़र किस बद बख्त की गवरनरी में वकू पजीर हुआ ?

जवाब:– उबैदुल्लाह बिन जियाद बद निहाद की ।

133 सवाल:– लुटा हुआ काफले अहले बैत करबला किस तारीख में पहोंचा ?

जवाब:– 20 सफरुल मुज़फ्फर को

134 सवाल:– शोहदा की लाशें कितने दिनों के बाद दफ्न किए गए ?

जवाब:– 40 रोज़ के बाद मगर लाशों का कुछ नहीं बिगड़ा था।

135 सवाल:– वह गोश्त जो यज़ीदियों के तआम के वक़्त खून बन गया था किस का था ?

जवाब:– अहले बैत अतहार से छीने हुए उंट का था।

136 सवाल:– वह कौन सा शहर है जिसका हाकिम मनसूर बिन इलियास ने यजीदी लशकर का इस्तकबाल किया ?

जवाब:– नसीबैन

137 सवाल:– शिम्र और यज़ीदियों के इस्तेकबाल के जुर्म मे नसीबैन का क्या हश्र हुआ ?

जवाब:– कहरे इलाही की बिजली गिरी जिस से सारा शहर तबाह होकर खाक हो गया।

138 सवाल:– कातिलाने अहले बैते अतहार से किस ने बदला लिया ?

जवाब:– मुखतार बिन उबैद सकफी ने।

139 सवाल:– इब्ने साअद के साथ नवासए रसूल अलैहिस्सलाम के मुकाबले में आने वालो के कत्ल का हुक्म किस ने दिया ?

जवाब:– मुखतार बिन उबैद सकफी ने।

140 सवाल:– मुख़तार सक्फी ने किस यज़ीदी के हाथ पांव कटवा कर जलवा दिया था ?

जवाब:– खौली बिन यज़ीद का जिस ने इमामे पाक के सरे मुबारक को नीज़े पर बुलन्द किया था।

141 सवाल:– मुखतार सक्फी ने सब से पहले किन यज़ीदियों के कत्ल का हुक्म दिया था ?

जवाब:– शिमर और इब्ने साअद के कत्ल का ।

142 सवालः— मुख़तार सक़फी कौन था ?

जवाबः— यह वह शख्स है जिस ने यज़ीदियों से बदला ले कर मुहिब्बे अहले बैत का सुबूत दिया और बाद में नबुव्वत का दावा किया ।

143 सवालः— यज़ीद पलीद जिसने गुलशने मुस्तफा को ताराज किया वो किस का बेटा था ?

जवाबः— कातिबे वही हज़रते अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु का ना ख़ल्फ बेटा था ।

144 सवालः— यज़ीद कितने दिनों तक तख़्ते हुकूमत पर बैठ कर जुल्म व सितम करता रहा ?

जवाबः— 4 चार साल तक ।

145 सवालः— यज़ीद के बाद कौन शख्स तख़्ते नशीन हुआ ?

जवाबः— मुआविया बिन यज़ीद मगर सिर्फ चंद मिनट के लिए ।

146 सवालः— मुआविया बिन यज़ीद ने तख़्ते शाही क्या कह के ठुकरा दिया ?

जवाबः— सल्तनत की असलियत सिर्फ खुल्फाए राशिदीन में थी इस वजह से मैं दस्त बरदार होता हूं ।

147 सवालः— उस ज़ालिम का नाम बताइए जिस की कब्र पर हर गुज़रने वाला पत्थर मारता है ?

जवाबः— यज़ीद पलीद कातिले अहले बैत ।

148 सवालः— मूसिल के उस हाकिम का नाम बताईए जिस ने कहा था कि जिसके दामन पर क़त्ले औलादे रसूल का खून हो उसके ठहरने के लिए मूसिल में कोई जगह नहीं ?

जवाबः— हाकिम एमादुद्दौला ने ।

149 सवालः— यज़ीद को किस ने क़त्ल किया था ?

जवाबः— रुमियुन्नस्ल साहिब की हसीना लड़की ने — लाश तीन रोज़ तक चील कव्वों की खूराक बनी रही ।

150 सवालः— मुख़्तार सक़फी ने कितने यज़ीदियों का क़त्ल किया था ?

जवाबः— तक़रीबन 6000 छः हज़ार

151 सवालः— यज़ीद की लाश को किस जगह दफन किया गया ?

जवाबः— शहरे दमिश्क़ के बाहर हम्स के क़रीब .... हवारीन में ।

152 सवालः— क्या यज़ीद खलीफा था ?

जवाबः— जी नहीं खुद साख्ता बादशाह था ।

153 सवालः— यज़ीदी फौज के मस्जिदे नबवी पर हमले और बे हुर्मती से कौन सहाबी ज़ार व क़तार रो रहे थे ?

जवाबः— हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रदियल्लाहु अन्हु ।

154 सवालः— यज़ीदी फौज के मदीना पर हमलों से कितने सरदाराने कुरैश और हाफिज़े कुरआन शहीद हुए ?

जवाबः— तक़रीबन सात सौ हुफ्फाज़े कुरआन और 97 सरदाराने कुरैश।

155 सवालः— वाक़याते कर्बला के बाद शहरे कूफा को किसने और क्यों वीरान किया था ?

जवाबः— अमीर तैमूर ने — उसका कहना था कि जहां खान्दाने नबुव्वत का खून बहाया गया हो मैं उसे आबाद नही देखना चाहता हूं ।

156 सवालः— हज़रत मूसा व हारून अलैहिस्सलाम ने सरे इमाम को सलाम अर्ज़ करने का हुक्म किस को दिया था ?

जवाबः— रईसे शहर मामूरा अज़ीज़ यहूदी को ।

157 सवालः— रईसे शहरे मामूरा अज़ीज़ यहूदी के साथ हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हु ने किस कनीज़ का अक़्द किया ?जवाबः— हज़रत शीरीन आज़ाद करदह कनीज़ इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु ।

158 सवालः— रईसे शहरे मामूरा अज़ीज़ यहूदी किस के दस्ते हक़ परस्त पर मुशर्रफ बइस्लाम हुए ?

जवाबः— हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु अन्हु के हाथ और साथ में शहर के सारे लोग हल्क़ा बगोशे इस्लाम हो गए)

159 सवालःक़त्ले हुसैन का दावा करने वाले किस यज़ीदी को यज़ीद ने

दिखाने की गर्ज़ से क़त्ल करवाया ?

जवाब:– बशीर बिन मलिक को जिस को शिम्र ने पहले ही रवाना कर दिया था ।

160 सवाल:– बादे वाक़ियाते करबला यज़ीद ने किस बद बख़्त को मदीना पर हम्ला करने के लिए रवाना किया था ?

जवाब:– मसरफ बिन उक़्बा को ।

161 सवाल:– यज़ीद ने मदीना ताराज करने के लिए कितनी फौज रवाना की थी?

जवाब:– तक़रीबन 20000 बीस हज़ार ।

162 सवाल:– यज़ीदी फौज ने मदीना में कितने मुसलमानों को शहीद किया ?

जवाब:– तक़रीबन 1700 सत्तरह सौ । जिन में मुहाजिरीन व अन्सार और सहाबा ताबिईन शामिल थे ।

163 सवाल:– बताईए वह कौन सहाबी हैं जिन की दाढ़ी के बाल को मदीना पर हमले के दौरान यज़ीदियों ने उखाड़ा ?

जवाब:– हज़रत सय्यिदुना अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु ।

164 सवाल:– यज़ीदी फौज का कमान्डर मुसरफ बिन उक़्बा किस अज़ाब मे गिरिफ्तार हो कर मरा ?

जवाब:– उस का पेट मवाद से भर गया था।

165 सवाल:– मुसरफ बिन उक़्बा के मरने बाद यज़ीदी फौज का चार्ज किस ने सम्भाला ?

जवाब:– हसीन बिन नमीर ने ।

166 हज़रत इमामे हुसैन के सगे भाई कितने हैं?

जवाब:– हज़रत इमामे हुसैन के सगे भाई दो हैं एक बड़े और एक छोटे बड़े भाई का नाम हज़रत इमाम हसन और छोटे भाई का नाम मुहसिन ।

167 सवाल:– हज़रत इमामे हुसैन की पैदाईश की तारीख़ क्या है ?

जवाब:– 4 शाबान सन 4 हिजरी

168 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के वक़्त क्या उमर थी ?

जवाब : . 56 साल, 5 माह, 5 दिन ।

169 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन की वालिदा का नाम क्या है?

जवाब:– शहज़ादिए नबी हज़रत फातेमातुज़्ज़हरा रदियल्लाहु अन्हा।

170 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन के वालिदे मोहतरम का नाम क्या है ?

जवाब:– दामादे रसूल हैदरे कर्रार हज़रत अली रदियल्लाहु अन्हु।

171 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन के नाना और नानी का नाम क्या है ?

जवाब:– नाना का नाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और नानी का नाम हज़रत खदीजा रदियल्लाहु अन्हा।

172 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन के दादा और दादी का नाम क्या है ?

जवाब:– दादा का नाम हज़रत अबू तालिब और दादी का नाम हज़रत फातमा बिन्त असद ।

173 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन की कितनी बहनें हैं और क्या क्या नाम हैं?

जवाब:– 3 बहने हैं 1 हज़रत जैनब 2 हज़रत रुकय्या 3 हज़रत उम्मे कुलसूम रदियल्लाहु अन्हुमा ।

174 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन की कितनी खाला हैं और क्या नाम हैं?

जवाब:– 3 खालाएं हैं 1 हज़रत जैनब 2 हज़रत रुकय्या 3 हज़रत उम्मे कुलसूम ।

175 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की तारीख क्या है ?

10 मुहर्रमुल हराम सन 61 हिजरी बरोज़ जुमा ।

176 सवाल:– शहीदों की कितनी किस्में हैं ?

जवाब:– 3 किस्में हैं 1 शहदे हकीकी 2 शहीदे फकही 3 शहीदे हुक्मी

177 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन के चाचाओं के नाम क्या है ?

जवाब:– 3 चचा हैं । 1 तालिब 2 अकील 3 जअफर।

178 सवाल:– हज़रत इमाम हुसैन की फूफीयां कितनी हैं ?

जवाब:– 2 फूफी हैं 1 उम्मेहानी फाख्ता बिन अबू तालिब, 2 जमानिया

बिन्त अबू तालिब ।

179 सवालः– हजरत इमाम हुसैन के सगे मामू कितने है ?

जवाबः– 2 सगे मामू हैं हज़रत इब्राहीम हज़रत अब्दुल्लाह , तय्यब, ताहिर

180 सवालः– यज़ीद पलीद कब पैदा हुआ ?

जवाबः– सन 25 हिजरी में।

181 सवालः– यज़ीद पलीद की मां का नाम क्या है ?

जवाबः– मैसून बिन्त कलबी नजदल ।

182 सवालः– यज़ीद पलीद कैसा था?

जवाबः– बहोत मोटा, बदनुमा, बदखुल्क, फासिक़ व फाजिर' शराबी बदकार' जालिम बेअदब व गुस्ताख ।

183 सवालः– यज़ीद पलीद के वालिद का नाम क्या है?

जवाबः– कातिबे वही व सहाबिए रसूल हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ।

184 सवालः–मुहर्रम का जुलूस सिर्फ काफिरो को दिखाने के लिए या खुश करने के लिए ताज़ियों को निकालना और शहर में गश्त कराना कैसा है ?

जवाब :– बुत या चांद व सूरज का सजदा करना या सर पर चोटियां रखना होली या दीवाली पूजना या राम लीला, जन्म स्टमी, राम नौमी आदि के जुलूसो और मेलो में अपनी शान बढ़ाने या काफिरों को खुश करने के लिए या कुफरिया त्योहारों का सम्मान करना या कोई चीज़ उन त्योहारो के दिन मुशरिकीन के घर तोहफे के तौर पर देना कुफ्र है। (बहारे शरीअत)

यूं ही अगर यह काम काफिरो को खुश करने के लिये या दिखाने के लिए किया गया तो क्या अन्जाम है। खुद गौर फरमाएं। और वह भी हराम काम कर के ।

185 सवाल :– बाजे के बारे में शरीअत का क्या हुक्म है ?

जवाबः– नाचना, ताली बजाना, सितार, हारमूनियम, चंग, तबूरा बजाना इस तरह दूसरे किस्म के बाजे सब नाजाईज़ है। (बहारे शरीअत)

186 सवालः–माहे मुहर्रम मे शादी ब्याह करना या सगाई की तारीख वगैरा रखना और शहीदाने करबला के अलावह किसी मर्हूम के इसाले सवाब के लिए तीजा, दसवां, बीसवां, चालीसवां, बरसी, वगैरह करना कैसा है ?

जवाब :– जाइज़ है – मना करने वाला या बताने वाला जाहिल है ।

187 सवालः– माहे मुहर्रम में गोश्त, मछली, अन्डा, पकवान पकाना, खाना खिलाना, जाइज़ है या नही ?

जवाब :– आम दिनों की तरह इस माह में भी यह सब जाइज़ है सरकारे इमाम हुसैन की खुशी सुन्नत की अदाएगी और शरीअत पर अमल करने में है ।

188 सवालः– मुहर्रम में बाल कटवाना, चेहरा बनवाना, नाखुन काटना, तेल लगाना, सुर्मा लगाना, कंघी करना, नए कपड़े बनवाना, पहन्ना, नया सामान खरीदना, मकान बनवाना, घर की पुताई, लिपाई करना, नई गाड़ी खरीदना जाईज है या नहीं ?

जवाब :– यह सारे काम इस माहे मुहर्रम में भी जाईज़ है ।

189 सवाल :– कुछ लोग मुहर्रम शरीफ का चांद देखते ही चप्पल जूते पहनना छोड़ देते हैं। और दस दिनों तक हरा लाल काला कपड़ा पहनते है क्या यह सब जाईज़ है ?

जवाबः– 1 मुहर्रम से बारह मुहर्रम तक यह सब कपड़े न पहने जायें इस लिए कि मना है ।

काला राफिज़ियों का तरीका है और लाल खारजियो का तरीका है और हरा ताजियादारों का तरीका है ।(बहारे शरीअत हिस्सा 16)

सवाल :– कौन कौन खलीफा कितनों दिनो तक खलीफा रहे ?

खलीफए अव्वल दस साल तीन माह दस दिन ।

खलीफए दोम दस बरस छ माह अट्ठारह दिन ।

खलीफए सोम ग्यारह साल ग्यारह माह ग्यारह दिन ।

खलीफए चहारुम चार साल नौ माह ।

खलीफए पन्जुम छ माह तीन दिन ।

।। ऐ हुसैन ।।

कलमए तौहीद है तेरी शहादत ऐ हुसैन ।
तू न होता तो न रह जाती सदाक़त ऐ हुसैन ।।

तेरी कुर्बानी ने ज़िन्दा कर दिया इस्लाम को ।
वो रहेगा ता अबद तेरी बदौलत ऐ हुसैन ।।

तालिबाने मंज़िले अम्नो सुकूं के वास्ते ।
तेरी कुर्बानी हुई शमए हिदायत ऐ हुसैन ।।

मिल्लते इस्लाम को मिलता है एक दर्से हयात ।
कैसे भूलें हम तेरा यौमे शहादत ऐ हुसैन ।।

एहतमाल आने का है फ़िर से यज़ीदियत का दौर ।
फ़िर जहाने नौ को है तेरी ज़रुरत ऐ हुसैन ।।

हाल मेरा कुछ भी हो मेरा अक़ीदा है यही ।
बख़्शवाएगी मुझे तेरी मुहब्बत ऐ हुसैन ।।

अज़

(बेकल बलराम पूरी)

उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

ख़ास्सए रब्बे दावर पे लाखों सलाम ।
मालिके हौज़े कौसर पे लाखों सलाम ।

नूरे ऐने पयम्बर पे लाखों सलाम ।
तिशनए आबे ख़न्जर पे लाखों सलाम ।

उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम ।
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम ।।

जिसको झूला फरिश्ते झुलाते रहे ।
लोरियाँ दे के जिनको सुलाते रहे ।

जिसको कंधों पे आक़ा बिठाते रहे ।
जिसे पे सफ्फाक ख़न्जर चलाते रहे ।

उस शहीदों के अफसर पे लाखों सलाम ।
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम ।।

जो जवानाने जन्नत का सरदार है ।
जिसका नाना दो आलम का सरदार है ।

जो सरापाए महबूबे ग़फ़्फ़ार है ।
जिसका सर दश्त में ज़ेरे तलवार है ।

उस सदाक़त के पैकर पे लाखों सलाम ।
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम ।।